Postal Registration No. CHD/0107/2024-2026 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका



दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 26 अंक 7 30 जूलाई, 2026 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

दल-बदल विरोधी कानून एवं पूर्व उपप्रधानमंत्री चौधरी देवीलाल का योगदान



डा. महेन्द्र सिंह मलिक

लोकतांत्रिक व्यवस्था की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि जनता द्वारा चुने गए, प्रतिनिधि अपने मतदाताओं और राजनैतिक दल के प्रति कितने उत्तरदायी रहते हैं। स्वतंत्रता के बाद विशेषकर 1960 और 1970 के दशक में देश में बड़े पैमाने पर राजनैतिक दल–बदल की घटनाएं हुईं जिससे सरकार की स्थिरता प्रभावित हुई। इसी समस्या के समाधान के लिए संविधान में दसवीं अनुसूची के अंतर्गत दल–बदल विरोधी कानून लागू किया गया है। दल–बदल के स्थाई अस्तित्त्व एवं निश्पक्षता को चुनौती देता है।

वर्ष 1967 के चौथे आम चुनावों के बाद यह समस्या विकराल रूप धारण कर गई। केवल एक वर्ष के भीतर देशभर में 438 विधायकों ने दल बदला, जिनमें से 115 को मंत्री पददेकर पुरस्कृत किया गया। कई मुख्यमंत्री और विधानसभा अध्यक्ष भी दल–बदल के माध्यम से बने। 1967 से 1971 के बीच लगभग 1400 से अधिक विधायकों ने राजनीतिक दल बदले। इस कालखंड को भारतीय राजनीति में दल–बदल का स्वर्णकाल कहा जाता है।

दल–बदल की बढ़ती प्रवृत्ति को देखते हुए 11 अगस्त 1968 को लोकसभा में श्री पी. वेंकट सुब्बैया द्वारा एक महत्वपूर्ण संकल्प प्रस्तुत किया गया। इसके आधार पर तत्कालीन केंद्रीय गृहमंत्री वाई. बी. चव्हाण की अध्यक्षता में उच्चस्तरीय समिति गठित की गई जिसने 1969 में दल–बदल रोकने के लिए विस्तृत सिफारिशें प्रस्तुत कीं। इसके बाद 1973 और 1978 में संविधान संशोधन विधेयकों के माध्यम से कानून बनाने के प्रयास हुए किंतु वे सफल नहीं हो सके।

इस पूरे दौर का सबसे चर्चित केंद्र हरियाणा रहा। राज्य गठन के मात्र एक वर्ष बाद 1967 में फरीदाबाद जिले के हसनपुर (वर्तमान होडल क्षेत्र) के विधायक गया लाल ने कुछ ही दिनों के भीतर कई बार अपनी राजनीतिक निष्ठा बदली। उस समय कांग्रेस नेता राव बीरेंद्र सिंह के सहयोगी द्वारा पत्रकारों के सामने कहा गया– गया राम अब आया राम है। यही वाक्यांश आगे चलकर पूरे देश में 'आया राम गया राम' के रूप में राजनीतिक अवसरवाद और दल–बदल का पर्याय बन गया। वास्तव में यह केवल एक विधायक की घटना नहीं थी बल्कि भारतीय लोकतंत्र की उस गंभीर कमजोरी का प्रतीक थी जिसमें जनता का जनादेश राजनीतिक सौदेबाजी का साधन बन गया। इसी कारण हरियाणा को भारतीय राजनीति की दल–बदल की प्रयोगशाला कहा जाने लगा।

वर्ष 1977 के विधानसभा चुनावों में जनता पार्टी को भारी बहुमत मिला और चौधरी देवीलाल मुख्यमंत्री बने। किंतु उस समय दल–बदल रोकने वाला कोई प्रभावी कानून नहीं था। 1979 में उनके ही मंत्रिमंडल के सदस्य भजन लाल ने 40 विधायकों को अपने साथ मिलाकर सरकार गिरा दी। चौधरी देवीलाल को बहुमत सिद्ध करने का अवसर तक नहीं मिला और उन्हें इस्तीफा देना पड़ा।

वर्ष 1982 में इतिहास स्वयं को दोहराता दिखाई दिया। हरियाणा विधानसभा की 90 सीटों में से लोकदल और भारतीय जनता पार्टी के गठबंधन के पास स्पष्ट बहुमत था फिर भी तत्कालीन राज्यपाल ने कांग्रेस के भजन लाल को सरकार बनाने के लिए आमंत्रित किया। इसके बाद विधायकों की खरीद–फरोख्त और संगठित दल–बदल के माध्यम से सरकार बनाई गई। राजनीतिक विश्लेषकों ने इसे भारतीय लोकतंत्र में **'संगठित दलबदल'** का सबसे बड़ा उदाहरण माना। चौधरी देवी लाल ने इस मुद्दे को अपनी राजनितिक आंदोलनों और सभाओ में जोर शोर से उठाया और दल बदल कानून लाने की वकालत की। इसी घटना ने पूरे देश में राजनीतिक नैतिकता पर गंभीर बहस छेड़ी और अंततः कठोर कानून की आवश्यकता निर्विवाद रूप से स्वीकार की गई।

इन्हीं परिस्थितियों के परिणामस्वरूप संविधान के 52वें संविधान संशोधन अधिनियम 1985 द्वारा संविधान में दसवीं अनुसूची जोड़ी गई और दल–बदल विरोधी कानून

शेष पेज–2 पर

शेष पेज–1

अस्तित्व में आया। इसका उद्देश्य निर्वाचित प्रतिनिधियों द्वारा व्यक्तिगत लाभ पद–लोलुपता और राजनीतिक अवसरवाद के कारण होने वाले दलबदल पर रोक लगाना तथा जनता के जनादेश की रक्षा करना था। इसके अंतर्गत यदि कोई विधायक या सांसद अपने दल की सदस्यता छोड़ देता है अथवा पार्टी के व्हिप के विरुद्ध मतदान करता है तो उसे अयोग्य घोषित किया जा सकता है।

यद्यपि इस कानून ने राजनीतिक अस्थिरता पर कुछ सीमा तक अंकुश लगाया, फिर भी इसकी अनेक कमियाँ समय के साथ सामने आईं। एक–तिहाई सदस्यों के अलग होने की छूट का व्यापक दुरुपयोग हुआ। आज भी विधायक और सांसद इस्तीफा देकर या अन्य तरीकों से दल बदल रहे हैं। स्पीकर की भूमिका राजनीतिक दबाव में है। अभी भी दल बदल कानून में कई तरह की छूट हैं जो बड़े दलों को फायदा पहुंचाती हैं। इसी कारण 2003 में 91वें संविधान संशोधन के माध्यम से इस प्रावधान को समाप्त कर दिया गया तथा केवल दो–तिहाई सदस्यों के वैध विलय को ही मान्यता दी गई। इसके बावजूद स्पीकर के निर्णय में अनावश्यक विलंब, इस्तीफों के माध्यम से कानून को निष्प्रभावी बना देना तथा सामूहिक दलबदल की प्रवशत्ति जैसी चुनौतियाँ आज भी बनी हुई हैं।

वर्ष 2016 में अरुणाचल प्रदेश में कांग्रेस के बड़े पैमाने पर विधायकों के दल–बदल के बाद भाजपा सत्ता में आई। इसके अगले वर्ष 2017 में मणिपुर विधानसभा चुनाव में कांग्रेस सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी, लेकिन भाजपा ने अन्य दलों और निर्दलीय विधायकों का समर्थन प्राप्त कर सरकार बना ली। वर्ष 2018 में मेघालय में भी भाजपा ने क्षेत्रीय दलों के साथ गठबंधन कर सरकार गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वर्ष 2019 भारतीय राजनीति के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण रहा। कर्नाटक में कांग्रेस–जनता दल (सेक्युलर) गठबंधन सरकार कई विधायकों के इस्तीफों के कारण गिर गई, जिसके बाद भाजपा ने सरकार बनाई। इसी वर्ष गोवा में कांग्रेस के 15 में से 10 विधायक भाजपा में शामिल हो गए, जिससे राज्य में भाजपा सरकार का बहुमत और मजबूत हो गया।वर्ष 2020 में मध्य प्रदेश में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता ज्योतिरादित्य सिंधिया के साथ 22 कांग्रेस विधायकों के इस्तीफे के कारण तत्कालीन कांग्रेस सरकार गिर गई।

बंगाल में एक अल्पज्ञात राजनीतिक दल–नेशनलिस्ट सिटीजनशिप पार्टी ऑफ इंडिया का उपयोग कानून के दायरे से बचते हुए दलबदल को आसान बनाने के लिए किया गया। दलों में विभाजन और अपात्रता से जुड़े मामले अदालत में महीनों और कभी–कभी वर्षों तक लंबित रहते हैं। जब तक फैसला आता है, तब तक सरकारें अपना कार्यकाल चला चुकी होती है और मंत्री पद का लाभ उठा चुके होते हैं।

दिल्ली में तृणमूल के सांसदों के पाला बदलने की तैयारी के दौरान उन्हें वरिष्ठ भाजपा नेताओं के साथ पूरी तरह से कम्फर्टेबल देखा गया। गोपनीयता बना, रखने की कोशिश तक नहीं की गई। महाराष्ट्र में शिवसेना के बागी विधायक चार्टर्ड विमानों से यात्रा करते दिखे, आलीशान होटलों में ठहरे और भारी सुरक्षा घेरे में अपने राजनीतिक भविष्य पर बातचीत करते रहे। यहां चौंकाने वाली बात दलबदल नहीं है। क्योंकि भारतीय राजनीति तो दशकों से दलबदल देखती आ रही है। ज्यादा महत्वपूर्ण बात यह है कि अब आम धारणा की कोई चिंता तक दिखाई नहीं देती। संदेश साफ है राजनीति एक लेन–देन है और हर कोई सौदे की शर्तें जानता है।

अब तो राज्यसत्ता के संसाधनों तक पहुंच भी इस सौदे का हिस्सा दिखाई देती है। जैसा कि एक शिवसेना सांसद ने कहा – अगर मुझे अपने निर्वाचन क्षेत्र की परियोजनाओं के लिए विकास–निधि चाहिए तो मैं और क्या करता? दलबदल को अब चुनावी जनादेश से विश्वासघात के रूप में नहीं देखा जाता। यह सामान्यीकृत हो चुका है और सत्ता हासिल करने की कोशिश में एक साधन के रूप में स्वीकार किया गया है।

मध्य प्रदेश में ज्योतिरादित्य सिंधिया और उनके समर्थकों के जाने के बाद कांग्रेस सरकार गिर गई। महाराष्ट्र ने पहले शिवसेना में विभाजन देखा और फिर राकांपा में टूट हुई। पूर्वोत्तर में भाजपा ने प्रतिद्वंद्वी दलों के नेताओं और विधायकों को साथ लेकर अपना विस्तार किया है। इस सबका लक्ष्य प्रतिद्वंद्वी दलों को संरचनात्मक झप से कमजोर करना और सत्तारूढ़ दल की राजनीतिक पहुंच को लगातार बढ़ाना है।

महान बनने के लिए जाति ऊंची नहीं होनी चाहिए बल्कि व्यवहार और कर्म ऊंचे होने चाहिए।

हरियाणा की राजनीतिक यात्रा में पूर्व उपप्रधानमंत्री एवं जननायक चौधरी देवीलाल का दल–बदल विरोधी कानून लाने में विशेष स्थान है। यद्यपि दल–बदल विरोधी कानून का विधायी श्रेय 1985 की राजीव गांधी सरकार को जाता है, किंतु चौधरी देवी लाल ने राजनीतिक नैतिकता, जनादेश के सम्मान और अवसरवादी राजनीति के विरोध को अपने सार्वजनिक जीवन का आधार बनाया। वे स्वयं 1979 और 1982 की घटनाओं में दल–बदल की राजनीति के सबसे बड़े पीड़ित रहे। उन्होंने 1985 के कानून का भी यह कहते हुए विरोध किया था कि इसकी अनेक कमियाँ भविष्य में राजनीतिक जोड़–तोड़ को समाप्त नहीं कर पाएँगी। उनका मत था कि दलबदल रोकने के लिए कानून को और अधिक कठोर तथा स्पष्ट बनाया जाना चाहिए। बाद में 91वें संविधान संशोधन द्वारा किए गए अनेक सुधार उनकी आशंकाओं की पुष्टि करते दिखाई दिए।

उनका मत था कि लोकतंत्र में जनता की सर्वोच्चता तभी सुनिश्चित होगी जब जनता को अपने चुने हुए प्रतिनिधियों को पाँच वर्षों तक बिना शर्त सहन करने के लिए विवश न रहना पड़े। यदि कोई जनप्रतिनिधि जनता का विश्वास खो देता है, भ्रष्टाचार में लिप्त हो जाता है अथवा अपने कर्तव्यों का निर्वहन नहीं करता तो मतदाताओं को उसे कार्यकाल समाप्त होने से पहले पद से हटाने का अधिकार मिलना चाहिए। यही लोकतांत्रिक सिद्धांत राइट टू रिकॉल कहलाता है।

राइट टू रिकॉल की अवधारणा का प्रारंभिक स्वरूप प्राचीन यूनान के एथेंस के प्रत्यक्ष लोकतंत्र में दिखाई देता है। आधुनिक स्वरूप अमेरिका के प्रोग्रेसिव आंदोलन के दौरान विकसित हुआ और 1903 में ओरेगन इसे लागू करने वाला पहला राज्य बना। बाद में कैलिफोर्निया, मिशिगन सहित अनेक अमेरिकी राज्यों ने इसे अपनाया। कोलंबिया और वेनेजुएला ने भी इसे संवैधानिक मान्यता प्रदान की।

भारत में राइट टू रिकॉल का सबसे पहला सुव्यवस्थित प्रस्ताव 1944 में महान चिंतक एम. एन. रॉय ने अपनी पुस्तक Constitution of Free India में रखा था। संविधान सभा में भी इस विषय पर चर्चा हुई, किंतु इसे संविधान में स्थान नहीं मिला। 1974 के सम्पूर्ण क्रांति आंदोलन के दौरान लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने इसे लोकतांत्रिक सुधारों का आवश्यक अंग बताया।

यद्यपि संसद और विधानसभाओं के लिए राइट टू रिकॉल आज भी लागू नहीं है फिर भी मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान तथा अन्य राज्यों ने स्थानीय स्वशासन संस्थाओं में विभिन्न रूपों में इसे अपनाया है। हरियाणा ने भी 2020 के संशोधन द्वारा पंचायत स्तर पर मतदाताओं को अपने निर्वाचित प्रतिनिधियों को वापस बुलाने का अधिकार प्रदान कर लोकतांत्रिक उत्तरदायित्व की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया।

आज भारत में लोकतांत्रिक सुधारों की दिशा में दो महत्वपूर्ण आवश्यकताएँ पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हो गई हैं– दल–बदल विरोधी कानून को और अधिक कठोर एवं प्रभावी बनाना तथा राइट टू रिकॉल को लागू करना। आज के दिन दल बदल कानून का और अधिक ठोस व मजबूत और प्रभावी होना आवश्यक है ।

आज आवश्यकता इस बात की है कि दल–बदल कानून को इतना कठोर बनाया जाए कि जनादेश के साथ विश्वासघात करने वाला कोई भी विधायक या सांसद तत्काल अयोग्य घोषित हो। स्पीकर के निर्णय की समय–सीमा निर्धारित हो तथा इस्तीफों के माध्यम से कानून से बच निकलने की सभी संभावनाएँ समाप्त की जाएँ। साथ ही राइट टू रिकॉल को पर्याप्त संवैधानिक सुरक्षा उपायों– जैसे न्यूनतम मतदाता समर्थन, कूलिंग पीरियड तथा निर्वाचन आयोग की निगरानी, के साथ चरणबद्ध रूप से संसद और विधानसभाओं तक विस्तारित किया जाए।

आज हमें एक ऐसे कानून की जरूरत है जो उस चुने हुए प्रतिनिधि का कार्यकाल इस्तीफे की तारीख पर ही अपने–आप खत्म कर दे, जिसने उस राजनीतिक पार्टी से इस्तीफा दिया हो जिसके टिकट पर वह चुना गया था। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के भी यही विचार थे 'सत्ता का खेल चलता रहेगा, सरकारें आएँगी–जाएँगी, पार्टियाँ बनेंगी–बिगड़ेंगी लेकिन यह देश रहना चाहिए और इस देश का लोकतंत्र अमर रहना चाहिए।

डॉ० महेन्द्र सिंह मलिक, आई.पी.एस. (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महा निदेशक हरियाणा,
प्रधान अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति व
जाट सभा, चंडीगढ़ व पंचकूला एवं
चेयरमैन, चौ० छोटूराम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

गोत्र, वंश, उपाधि, बौंक

– डा. राजेन्द्र कुमार, (मो० 9897821175)

अनन्त काल से जाटों की पहचान उनके गोत्र हैं, जिन्हें वे गोत कहते हैं। यह गोत्र–परम्परा अत्यधिक समृद्ध, प्राचीन और सुव्यवस्थित है। जाति के भीतर और गोत्र से बाहर विवाह की मान्यता जाटों की समाज संरचना का मूल आधार है। महर्षि पाणिनि ने "अष्टाध्यायी" ग्रंथ में गोत्र को परिभाषित करते हुए लिखा है–"अपत्यं पौत्रं प्रभृति गोत्रम् अर्थात पुत्र को छोड़कर पौत्र, प्रपौत्र आदि संतति समूह का नाम गोत्र है। गोत्र एक हिन्दू सांस्कृतिक अवधारणा थी, जिसे जाटों द्वारा गम्भीरतापूर्वक आत्मसात कर लिया गया। संस्कृत साहित्य में "गोत्र" शब्द गायों के बाड़े (गोठ) के लिए प्रयुक्त होता था। प्रत्येक गोत्र (बाड़े) का अपने एक समान पशुओं की पहचान के लिए अलग छाप चिह्न लगाया जाता था, जिससे गायों के स्वामी को अपनी गायों की पहचान हो सके। इस विचार को उन भ्रमणशील ब्राह्मणों द्वारा आत्मसात किया गया होगा, जिन्होंने, जैसा कि प्राचीन ग्रंथों में दिया गया है, आदिवासी स्त्रियों के साथ विवाह किया था। महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुसार ऋग्वैदिक शब्द के रूप में गोत्र का अर्थ है "आगे बढ़ने वाली सन्तति।" "गो" अर्थात गमन करने वाली (पृथ्वी) और "त्र" का अर्थ है सदैव गतिशील (चलने वाला), यानि संतान, जिसका विशिष्ट अर्थ है "परिवार, वंश और उससे जुड़े लोग (जैसे कि "एक बाड़े के भीतर झुण्ड हो")। (महर्षि दयानन्द सरस्वती : ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, पृ. 199) यह परिभाषा अपेक्षाकृत बाद में, पहली बार, पहली शताब्दी ईसापूर्व में छान्दोग्य उपनिषद में दर्ज की गयी। अथर्ववेद में गोत्र शब्द सबसे पहले कबीले के अर्थ के साथ आता है, जिसे उसे एक विशेष अर्थ के साथ बरकरार रखा गया है। मोटे तौर पर यह उन लोगों को संदर्भित करता है जो एक सामान्य पुरुष पूर्वज के वंशज हैं।

गोत्र को प्रायः उपनाम के रूप में इस्तेमाल किया जाता है, लेकिन यह उपनाम नहीं है, उससे अलग है। गोत्र का प्रयोग दक्षिण भारतीय ब्राह्मणों का गुण विशेष था। बाद में क्षत्रियों और तदनन्तर उन लोगों द्वारा भी जो पहले बौद्ध थे, लेकिन हिन्दू धर्म के साथ आने के बाद भी ब्राह्मणों ने उनसे दूरी बनाये रखी, उन्हें निचली जाति का (वृषल) माना, इसका अनुकरण किया गया जो अपनी स्थिति को ऊपर उठाना चाहते थे। उन्होंने अपने कुलदेवताओं के नामों को छिपाने के लिए ब्राह्मण गोत्रों के नाम उधार ले लिये। हो सकता है प्राचीन ऋषियों के नाम पर रखे जाटों के गोत्रों के पीछे यही कारण हो। गोत्र का उपयोग लगभग सार्वभौमिक रूप से उन विवाहों को रोकना है जो पारम्परिक रूप से अनाचारपूर्ण होते हैं। इन विवाहों को यद्यपि कानूनी रूप से ऐसा नहीं माना जाता, किन्तु निषिद्ध सम्बन्ध की डिग्री के भीतर या जो सपिण्ड हों उन्हें विवाह करने की अनुमति कानून भी नहीं देता।

जैसे जाति जीवन–पर्यन्त नहीं बदली जा सकती, उसी प्रकार गोत्र भी नहीं बदला जा सकता। सभ्यता के उषाकाल से चले आ रहे गोत्र आज तक अपनी अविच्छिन्न धारा के रूप में जाटों में चले आ रहे हैं। भाषान्तर या कालान्तर से रूप–भेद अवश्य होता रहा है और कभी–कभी नये विशेषण, जैसे स्थान, उपाधि, उपनाम आदि को भी गोत्र के रूप में प्रयोग किया जाने लगता है पर वह गोत्र नहीं हो जाता। शायद इसी कारण से गोत्रों की संख्या में वृद्धि दिखाई देती है।

यद्यपि जाट समुदाय में वर्ण–व्यवस्था, जातिवाद और ऊंच–नीच का अभाव और आडम्बरहीनता रही है परन्तु उनमें भारी संख्या में गोत्र मौजूद हैं, जो ब्राह्मण–शास्त्रों में वर्णित गोत्रों से भिन्न रूप लिए हुए हैं, क्योंकि उनमें सातवीं पीढ़ी तक की गणना की जाती है। इसी रूढ़ परिभाषा और परम्परा से हटकर जाट "गोत" शब्द का प्रयोग करते हैं, "गोत्र" शब्द का नहीं। जाटों में गोत मोटे तौर पर उन लोगों को संदर्भित करता है जिनका वंश एक मूल पुरुष–पूर्वज के अटूट क्रम में जुड़ा है। उन्होंने सदैव स्वयं को रक्त–सम्बन्ध और पैतृक गोत में संगठित किया है चाहे उसके बाद कितनी भी पीढ़ियाँ हो चुकी हों और उनका निवास स्थान भी बदल चुका हो। इसलिए जाटों में कहावत है–गोती–गोती भाई, बाकी सब अस्नाई।श अर्थात एक गोत के व्यक्ति आपस में भाई–भाई होते हैं और बाकी अन्य सब सम्बन्धी होते हैं। प्राचीन गोत इस बात की पुष्टि करते हैं कि कुछ जाट समुदाय भारत के मूल निवासी हैं और कुछ बाहर से आये शकों तथा अन्यों की संतानें हैं।

जाटों में भी गोत्र का मुख्य महत्व विवाह के सम्बन्ध में है जो एक सामान्य गोत्र में करना वर्जित है, क्योंकि जैसा पहले कहा जा चुका है, एक गोत्र के सदस्य परस्पर भाई–बहन माने जाते हैं, और जाट इसे अभी तक पूरी तरह मानते आये हैं। जाटों में समान गोत्र के साथ–साथ, माता (मामा) के गोत्र में भी विवाह नहीं किया जा सकता। कुछ

समय पहले तक पिता की माता (दादी) के गोत्र में भी विवाह नहीं किया जा सकता था, जो कुछ इलाकों में अभी भी प्रचलन में है। खाप पंचायतें इस पर काफी सख्ती बरतती आई हैं। खाप पंचायतें गोत्र के भीतर विवाह को कानूनी रूप से प्रतिबंधित करने के लिए अभियान चलाती रहती हैं। कादियान खाप के एक संयोजक श्री नरेश कादियान ने ऐसे विवाहों को कानूनी रूप से प्रतिबंधित करने के लिए हिन्दू विवाह अधिनियम में संशोधन की मांग करते हुए 2010 में दिल्ली उच्च न्यायालय में याचिका दायर की थी, हालांकि उसे खारिज कर दिया गया था।

विदेशी लेखकों द्वारा गोत्र और कुल को एक–साथ संदर्भित किया जाता है, लेकिन गोत्र कुल से अलग होता है। कुल एक विशेष परिवार की परम्परा होता है, जबकि गोत्र अनेक कुलों के बराबर होता है। ऐसे ही वंश भी गोत्र नहीं है। हालांकि वर्तमान समय में वंश और गोत्र एक ही अर्थ में प्रयोग होने लगे हैं जिससे वंशों और उनके गोत्रों में अन्तर करना कठिन हो गया है। शास्त्रज्ञ विद्वान कहते हैं कि सृष्टि के आरम्भ में एक ही वंश मनुवंश था। उसके बाद उसके पुत्रों से सूर्य वंश और पुत्री इला से चन्द्रवंश चले, जो आज तक चलते आ रहे हैं। प्राचीन संस्कृत साहित्य, जैसे पाणिनि के गणपाठ और कौटिल्य के अर्थशास्त्र के अलावा विभिन्न प्राचीन अभिलेखों में असंख्य जाट गोत्रों के नाम मिलते हैं। ध्यान देने की बात यह है कि ये ही नाम राजपूत, गूजर, पंजाब के खत्री आदि समुदायों में भी मिलते हैं। जाति भेद होते हुए भी गोत्र समानता क्या यह सिद्ध नहीं करती कि समान गोत्र वाले उक्त लोगों के पूर्वज कभी साझे रहे होंगे। यदि ऐसा था तो यह भी विचार करने वाली बात है कि एक ही समुदाय के लोगों ने भिन्न–भिन्न जाति नाम कैसे अपना लिये। हम जानते हैं कि धर्म बदला जाता है पर जाति नहीं। लेकिन यहाँ तो बदली हुई जाति / समुदाय साफ दिखाई दे रहा है। इसके पीछे का कारण बताया जाता है, कि बौद्ध धर्म के बढ़ते असर को रोकने के लिए चतुर ब्राह्मण–विद्वानों ने आबू पर्वत पर विशाल यज्ञ का आयोजन किया, जिसमें भाग लेने वालों का नामकरण "राजपूत" क्षत्रिय कर दिया गया। एक भाई ने यज्ञ में भाग लिया, वह राजपूत बन गया और जिस दूसरे ने भाग नहीं लिया वह जाट, गूजर, अहीर या जिस बिरादरी का था, वही रह गया। किंवदन्ती है कि इस यज्ञ कुंड से 4 वीर क्षत्रियों की उत्पत्ति हुई जिन्हे प्रतिहार, परमार, सोलंकी और चहमान (चौहान) की उपाधियां प्रदान की गयीं, जो बाद में गोत्र बन गयीं, पर इन सबका वंश अग्निवंश ही रहा। इस प्रकार वंश दो से छः हुए और बाद में बढ़ते चले गये।

अनन्त काल से राजा, सरकार, संस्था या समाज किसी व्यक्ति को उसके महान कार्य, योगदान या किसी विशेष उपलब्धि के बदले में उपाधि प्रदान करते रहे हैं, जिससे समाज में उसकी अलग पहचान बन जाती है। पूर्व काल में राजा सीरध्वज को जनक (जिससे सीता को सीर/वज की पुत्री न कहकर राजा जनक की पुत्री कहा जाता है), शान्तनुपुत्र देवव्रत को भीष्म (भीष्म पितामह) कहा जाना भी उपाधियां ही तो थीं। मुगल सम्राट बाबर, अकबर, जहांगीर आदि भी उनके नाम नहीं, बल्कि उनके द्वारा धारण की गयी उपाधियां थीं। ऐसे ही अंग्रेजों ने कुछ प्रभावशाली लोगों को खुश करके अपने पक्ष में करने के लिए "सर", "राय बहादुर", "राय साहब" जैसी उपाधियां दीं। समाज द्वारा दी गयीं भारत केसरी, दीनबन्धु, कृषि–पन्डित जैसी उपाधियां या विश्वविद्यालयों द्वारा प्रदान की गयी बी.ए., एम.ए., एम.एस–सी, पीएच. डी. जैसी शैक्षिक उपाधियां भी ऐसी ही हैं, जो व्यक्ति विशेष के

जीवनकाल के लिए ही हैं, इनका प्रयोग गोत्र के संदर्भ में नहीं किया जा सकता। इसके विपरीत कुछ स्थानीय उपाधियां ऐसी व्यापक हो जाती हैं, जिन्हें पीढ़ी दर पीढ़ी व्यवहृत किया जाता है, और कई जगह गोत्र ही मान लिया जाता है, जबकि ये गोत्र नहीं होते। बोलचाल में इन्हें ही श्बौंकश कहा जाता है। उदाहरण स्वरूप एक व्यक्ति घड़े में पानी ले जाती एक स्त्री से टकरा गया, जिससे उसका घड़ा फूट गया। स्वभावतः स्त्री को गुस्सा आया और उसके मुंह से निकल गया, "अंधा कही का।" लोगों ने उसे हंसी में अंधा कहना शुरू कर दिया और उनके परिवार को "अन्धों का" तथा बाद में वे लोग "अंधों के" (आंधू के) नाम से ही पहचाने जाने लगे। उनका कुटुम्ब बढ़ता गया और लगभग बीस परिवार हो गये हैं।

यह उनकी उपाधि या गोत नहीं "बौंक" है। ऐसे ही बताया जाता है कि बागपत जिले के तुगाना गांव का कर्म सिंह नामक व्यक्ति वहां से लगभग 80 किलोमीटर दूर मुजफ्फरनगर पैदल जा कर शाम को लौट आता था। लोग उसे घोड़ा कहने लगे थे। अब गांव में उनके कम–से–कम दस परिवार है, जो "घोड़ो के" कहलाते हैं। यह उनका "बौंक" पड़ गया। इस तरह के उदाहरण जाट गांवों में प्रायः मिलते हैं।

अनेक जाट अपने नाम के आगे चौधरी या वर्मा लगाते हैं। परन्तु ये दोनों विशेषण गोत्र, वंश या बौंक नहीं हैं और न उपाधि ही हैं अपितु जाट समुदाय से जुड़ा होने का प्रयास है।

राजा राम जाट के बलिदान दिवस पर गौरवपूर्ण श्रद्धांजलि (1670-1688)

– जयपाल सिंह पूनियां, एम.ए.इतिहास
एच.एफ.एस (सेवानिवृत) (मो० 9466110050)

राजा राम जाट एक महान जाट नेता थे, जिन्होंने सम्राट अकबर के मकबरे को बाहर खींचकर उनके अवशेषों को जला दिया था।

राजा राम (1670–1688) एक महान जाट नेता और औरंगजेब के खिलाफ स्वतंत्रता संग्राम के आयोजक थे। वे भारत के भरतपुर रियासत में सिंनसिनी के सरदार थे। राजा राम, सिंनसिनी के भज्जा सिंह के पुत्र थे। बृज राज और भज्जा सिंह भाई थे। चूडामन, बृजराज और राजा राम जो भज्जा सिंह के पुत्र थे। इस प्रकार, चूडामन और राजा राम चचेरे भाई थे। गोकुला की शहादत के बाद, राजा राम ने अत्याचारी मुगलों के खिलाफ विद्रोह की मशाल को जीवित रखा।

फौजदार राजा राम (1686 – 1688 ई.)

राजाराम जाट

राम सरूप जून लिखते हैं कि... गोकल सिंह की मृत्यु के 15 वर्ष बाद भरतपुर के सिंनसिनी गाँव के फौजदार राजा राम एक जाट नेता के रूप में उभरे। उन्होंने चहारवती के एक अन्य जाट नेता राम चहार के साथ गठबंधन किया।

आपसी सहयोग से उन्होंने आधुनिक युद्धकला में प्रशिक्षित और आधुनिक हथियारों से लैस एक सुव्यवस्थित सेना की भर्ती और संगठन किया। उन्होंने सिंनसिनी के पास एक स्थान पर एक किला बनवाया। इन बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति के बाद, राजा राम ने शाही खजानों और काफिलों पर आक्रमण करना शुरू कर दिया। उन्होंने चौकियों का ऐसा जाल बिछाया कि कोई भी शाही काफिला बिना किसी बाधा के आगे नहीं बढ़ सकता था। एक बार उन्होंने अकबर के मकबरे को नष्ट करने के इरादे से आगरा को घेर लिया। हालांकि, सिकंदरा में मुगल सेना के कमांडर अब्दुल फजल की वीरतापूर्ण कार्रवाई के कारण वे अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सके। एक बार जाटों ने धौलपुर के पास खान बहादुर के शिविर पर हमला किया, उनके दामाद और 80 सैनिकों को मार डाला और बड़ी संख्या में घोड़े, गाड़ियां और मुस्लिम महिलाओं को अपने साथ ले गए। औरंगजेब इन गतिविधियों से बहुत परेशान हुआ, लेकिन उस समय वह दक्कन में मराठों से लड़ने में पूरी तरह व्यस्त था। 1686 में उन्होंने जाटों को कुचलने के लिए जफर जंग कोकलताश के नेतृत्व में एक सेना भेजी, जिसे बुरी तरह से हार का सामना करना पड़ा। 1687 में फिर से राजकुमार आजम के सबसे बड़े बेटे बिदार बख्त के नेतृत्व में खान जहान की सहायता से इसी तरह के अभियान के लिए और अधिक सैनिक भेजे गए। लेकिन यह सेना भी सफल नहीं हो पाई।

राजा राम ने मीर इब्राहिम उर्फ महाबत खान के शिविर पर हमला किया और 190 सैनिकों को मार डाला और घायल कर दिया। इसके बाद वे पंजाब की ओर बढ़े और यमुना नदी के किनारे डेरा डाला। उन्होंने अकबर के मकबरे पर हमला किया, उसे लूटा और आगरा के गवर्नर शाहिस्ता खान को पराजित किया। बीदर काख्त बिना लड़ाई के पीछे हट गया। राजा राम चौहान शासकों की मदद करते हुए शेखावतों के खिलाफ लड़ाई में शहीद हो गए, जिन्हें मुगलों का समर्थन प्राप्त था। उन्होंने अपने नेतृत्व के दो वर्षों के भीतर ही जाटों में एक नई ऊर्जा का संचार किया, जो अहंकारी और कट्टर औरंगजेब के शासन के खिलाफ आगे के संघर्षों में बहुत उपयोगी साबित हुई। फौजदार राजा राम की तुलना आसानी से शिवाजी से की जा सकती है। जहाँ शिवाजी को युद्ध क्षेत्र की पर्वतीय विशेषताओं से सहायता मिली, वहीं राजा राम ने मैदानी इलाकों में मुगलों से लड़ाई लड़ी, जहाँ बड़ी सेनाओं को समर्थन मिलता था।

महान आयोजक

भज्जा सिंह ने अपने भाई सिनसिनी के बृज राज और अपने रिश्तेदारों के साथ मिलकर सिंसिनवार और कुंतल गोत्र के जाटों की एक छोटी सेना तैयार की। राजा राम ने विभिन्न गोत्रों के जाट समूहों को संगठित किया और उन्हें अपने अधीन एकजुट किया।

सोगरिया भरतपुर का एक शक्तिशाली जनपद था और इसका सरदार रामकी चाहर था। सोगरिया जाटों का पहले से ही सोगर (भरतपुर से 4 मील दक्षिण–पूर्व) में एक किला था। उसने रामकी चाहर को अपने साथ ले लिया। उसने सिदगिरी क्षेत्र (बयाना, रूपबसैया) के जाटों से मेल–मिलाप किया। उसने आमेर के शासक राम सिंह के विरुद्ध रणथंभोर के जाटों से भी मित्रता की। समकालीन संदेशों के आधार पर यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि राजा राम एक महान एकजुटता केंद्र साबित हुए और बड़ी संख्या में जाट उनके नेतृत्व में एकजुट हुए। इस प्रकार उन्होंने बिखरी हुई और

असंगठित जाट शक्ति को एकजुट करने का महत्वपूर्ण कार्य पूरा किया।

सैन्य प्रशिक्षण

उसने जाट बहुल क्षेत्र में चारों ओर कच्चे मिट्टी के किले बनवाने की योजना बनाई। उसने युवा किसानों को कुशल सैनिकों के रूप में प्रशिक्षित किया। उसने विद्रोहियों को अपने सरदार के निर्देशों का कड़ाई से पालन करने की शिक्षा दी।

इसके बाद, उन्होंने अपने अनुयायियों को सैन्य दृष्टिकोण से संगठित करना शुरू किया। उन्होंने उन्हें सैन्य प्रशिक्षण दिया और उन्हें आग्नेयास्त्रों से लैस किया। उन्होंने उन्हें घुड़सवारी और हथियारों का प्रशिक्षण दिया। उन्होंने बंदूकें और अन्य शस्त्र एकत्र किए।

उन्होंने जाटों को विभिन्न सेनापतियों के अधीन रेजिमेंटों में संगठित किया। साथ ही, उन्होंने स्वतंत्र इच्छाशक्ति और स्वतंत्रता प्रेमी जाटों को अनुशासन में रहने और अपने सेनापतियों की आज्ञा का पालन करने की आवश्यकता समझाई। इस प्रकार उन्होंने उन्हें एक नियमित सेना का आभास कराया।

रक्षा रणनीति

राजा राम ने अपनी रक्षा व्यवस्था को मजबूत करने पर विशेष ध्यान दिया, क्योंकि उन्होंने देखा होगा कि उचित सुरक्षा के अभाव में तिलपत पर आसानी से कब्जा कर लिया गया था और इस प्रकार गोकुल के नेतृत्व में जाटों के विद्रोह का अंत हो गया था। इसलिए राजा राम ने अपने किले घने जंगलों में बनवाए और उन्हें मिट्टी की दीवारों से घेर दिया। जाट इतिहास की किताबें घने जंगलों और मिट्टी की दीवारों के कारण ये किले गोकुला के मुख्य गढ़ से भी अधिक मजबूत थे। ये किले अभियानों और शरणस्थलों के साथ–साथ लूटे गए माल को छिपाने के स्थान के रूप में भी काम करते थे। जैसा कि उनकी रणनीति से स्पष्ट है, राजा राम ने जाट युद्ध की पारंपरिक पद्धति, जिसे लोकप्रिय रूप से "धार" (गुरिल्ला) प्रणाली के रूप में जाना जाता है, का पालन किया। उन्होंने मुगलों के साथ आमने–सामने की लड़ाई से परहेज किया और अचानक और निडर हमलों तक ही सीमित रहे। इससे उन्हें न्यूनतम नुकसान के साथ अधिकतम लाभ प्राप्त हुआ। ये बदलाव लाभकारी साबित हुए और धीरे–धीरे जाट विद्रोह की सफलता में योगदान दिया।

राजा राम द्वारा छापे

इस प्रकार तैयारी करने के बाद, राजा राम ने आगरा सूबे के ग्रामीण इलाकों में छापे मारने शुरू कर दिए। जाट सड़कों पर मंडराते रहे और मुगलों के काफिलों को लूटते रहे। आगरा सूबेदार सफी खान आगरा किले में लगभग घिर गए थे। अन्य विद्रोहियों – नरुका, पंवार, गुर्जर और मेवों – के साथ मिलकर उन्होंने धौलपुर और दिल्ली तथा आगरा और अजमेर के बीच हिंडौन और बयाना होते हुए सामान्य यातायात को लगभग बंद कर दिया था। विद्रोहियों द्वारा मचाई गई दहशत का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि मथुरा जैसे महत्वपूर्ण स्थान पर जामा मस्जिद के अलावा कोई भी जगह सुरक्षित नहीं थी। राजा राम ने सिकंदरा स्थित अकबर के मकबरे को भी लूटने का प्रयास किया। लेकिन स्थानीय फौजदार मीर अबुल फजल ने उनके इस प्रयास को विफल कर दिया। उन्होंने सिकंदरा से 10 मील दूर एक स्थान पर विद्रोहियों का सामना किया। फौजदार उन्हें खदेड़ने में सफल रहा, हालांकि इस प्रक्रिया में वह गंभीर रूप से घायल हो गया और उसके कई सैनिक भी शहीद हो गए। राजा राम को भी भारी नुकसान उठाना पड़ा। औरंगजेब ने फौजदार को इल्तिफत खान की उपाधि से सम्मानित किया और उसकी जागीर 200 सवार बढ़ा दी। सिकंदरा में असफल होने के बाद राजा राम ने शिकारपुर पर आक्रमण किया और वहां से भारी मात्रा में धन लूटा। वहां से वह रतनपुर की ओर पीछे हट गया।

सम्राट औरंगजेब की चिंताएँ

राजा राम की शरारतें और उपद्रव बढ़ते जा रहे थे। इससे सम्राट चिंतित हो गए। 3 मई 1686 को उन्होंने विद्रोहियों को दंडित करने के लिए खान–ए–जहाँ बहादुर जफरजंग कोकलताश को नियुक्त किया। हालांकि, अपने अथक प्रयासों के बावजूद, खान–ए–जहाँ जाटों के किसी भी गढ़ पर कब्जा करने या उन्हें दंडित करने में असफल रहे। इसलिए, उन्होंने अपने पुत्र मुहम्मद आजम को जाटों के विरुद्ध आगे बढ़ने का आदेश दिया। लेकिन वह बुरहानपुर (जुलाई 1687) ही पहुँच पाए थे कि गोलकोंडा की अधिक आवश्यकताओं के कारण औरंगजेब को राजकुमार को वापस बुलाना पड़ा। इसके बाद बीदर बख्त को (दिसंबर 1687) जाट युद्ध में सर्वोच्च कमान संभालने के लिए भेजा गया, जबकि खान–ए–जहाँ को उनके उप–कप्तान के रूप में कार्य करने का आदेश दिया गया।

राजा राम ने अगर खान की हत्या कर दी।

इसी बीच, राजा राम ने और भी अधिक साहस दिखाया। उन्होंने मुगल सेनापति अगर खान पर हमला कर दिया। अगर खान अपने दल के साथ काबुल से बीजापुर जा रहे थे, तभी धौलपुर के पास जाटों ने उन पर हमला कर दिया और कई बैल, गाड़ियाँ, घोड़े और महिलाओं को अपने साथ ले गए। सेनापति ने उनका जमकर पीछा किया, लेकिन झड़प में वे अपने दामाद और 80 अन्य सैनिकों के साथ मारे गए। इस

लड़ाई में 200 जाट शहीद हो गए। इस साहसिक कार्य से मिला मनोवैज्ञानिक लाभ भौतिक लाभ से कहीं अधिक था। सीमावर्ती अफगानों के कुख्यात दमनकारी को मारने और खदेड़ने में मिली सफलता ने जाटों के साहस को और भी बढ़ा दिया होगा। उन्होंने अपनी लूटपाट को और भी आगे बढ़ाया।

सन् 1688 की शुरुआत में, राजा राम ने महाबत खान पर हमला किया, जो लाहौर जाते समय सिकंदरा के पास डेरा डाले हुए था। दोनों के बीच भयंकर युद्ध हुआ, जिसमें राजा राम को अंततः पराजित होना पड़ा और 400 सैनिकों को खोकर पीछे हटना पड़ा। दूसरी ओर, 150 सैनिक मारे गए और 40 घायल हुए।

राजा राम ने सिकंदरा पर आक्रमण किया

कुछ समय बाद राजा राम सिकंदरा में पुनः प्रकट हुए और आगरा के नियुक्त राज्यपाल शाहिस्ता खान के आने में हुई देरी का फायदा उठाते हुए उन्होंने अकबर के मकबरे पर हमला कर उसे लूट लिया। जाट सरदार सोने–चांदी की बहुमूल्य वस्तुएं, कालीन, दीपक आदि ले गए और जो कुछ वे नहीं ले जा सके उसे नष्ट कर दिया।

मनुची के अनुसार, जाटों ने अकबर की हड्डियाँ घसीटकर निकालीं, उन्हें क्रोधित होकर आग में फेंक दिया और जला दिया। इस प्रकार उन्होंने गोकुला का बदला लिया। खान–ए–जहाँ के नायब मुहम्मद बाका, जो उस समय आगरा में थे, ने विद्रोहियों को रोकने के लिए कुछ नहीं किया। इसलिए, दंड के रूप में, खान–ए–जहाँ के नायब पर 500 सवारों का जुर्माना लगाया गया और उनके मनसब में 1000 सवारों की कटौती की गई। जाटों ने ताजमहल के निर्माण के लिए आरक्षित गाँवों को भी लूटा। कुछ जाटों ने खुर्जा के आसपास के इलाकों को तहस–नहस कर दिया, जबकि अन्य ने पलवल में स्थानीय मुगल अधिकारियों को बंदी बना लिया।

एक उल्लेखनीय तथ्य यह है कि स्थानीय मुगल अधिकारी और सैनिक आम तौर पर जाटों की अवज्ञा को अनदेखा करते रहे और यहाँ तक कि लूटे गए माल में बाँटने के लिए गुप्त रूप से उनसे मिलीभगत भी करते रहे। यह भी उल्लेखनीय है कि आगरा में खान–ए–जहाँ के प्रतिनिधि मुहम्मद बाकघ, राजा राम द्वारा अकबर के मकबरे को लूटने के दौरान निष्क्रिय रहे। इससे औरंगजेब क्रोधित हो गया और उसने प्रतिनिधि का मनसब 500 और खान–ए–जहाँ का मनसब 1,000 सवार कम कर दिया। इस बीच, जाटों के दुस्साहस और निर्भीकता ने औरंगजेब को चिंतित कर दिया और उसने राजा राम सिंह (जो काबुल में थे) को राजा राम को दंडित करने का आदेश दिया। लेकिन उनकी अचानक मृत्यु के कारण राजा अपना कार्यभार पुनः ग्रहण नहीं कर सके।

बिजल का युद्ध

दूसरी ओर, राजा राम ने अपने विद्रोही कार्यों को जारी रखा। उनकी शक्ति और संसाधन अब दूसरों का ध्यान आकर्षित करने लगे थे।

इन दिनों बागथारिया (अलवर से 22 मील उत्तर–पूर्व) और कुछ अन्य परगनों में विवादित भूमि को लेकर चौहानों और शेखावत राजपूतों के बीच चल रहा झगड़ा खुले युद्ध में तब्दील हो गया था। चौहानों ने राजा राम से मदद की गुहार लगाई, जबकि शेखावतों ने मेवात के मुगल फौजदार मुर्तजा खान से सहायता मांगी।

बिलार बख्त, बूंदी के राव राजा अनिरुद्ध सिंह और महाराव किशोर सिंह हाड़ा फौजदार और शेखावतों के साथ मिल गए। बिजल के पास एक भयंकर युद्ध हुआ। राजा राम के सामने हाड़ा सरदार था, जिसे उन्होंने करारी हार दी।

अनिरुद्ध सिंह स्वयं जाटों के आक्रमण का सामना नहीं कर सके। वे घबरा गए और अपने सैनिकों के साथ भाग गए। जब युद्ध अपने चरम पर था, तब वीर राजा राम ने मुगल सेना के केंद्र पर एक भयंकर आक्रमण का नेतृत्व किया। इसी दौरान, एक मुगल तोपची, जो एक पेड़ में छिपा हुआ था, ने राजा राम की छाती पर तीर चला दिया। वे घोड़े से गिर पड़े और बुधवार, 4 जुलाई 1688 को उनकी तत्काल मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु चौहानों की पराजय का संकेत थी। उनका सिर धड़ से अलग कर दिया गया और बाद में दक्कन में औरंगजेब को भेंट किया गया (5 सितंबर 1688, 19 जी–कादा, 1099 हिजरी)। रामकी चाहर युद्ध में जीवित ही पकड़े गए और आगरा में सार्वजनिक रूप से उन्हें फाँसी दे दी गई।

राजा राम का आंकलन

इस प्रकार राजा राम का अंत हुआ। एक नेता, सैनिक, आयोजक और रणनीतिकार के रूप में वे निःसंदेह अपने से पूर्व के सभी जाट सरदारों से कहीं अधिक सक्षम थे। समकालीन इतिहास पर उनके प्रभाव का अब तक उचित मूल्यांकन नहीं किया गया है।

समकालीन स्रोत

इस अनुभाग का लेखन और शोध चौ० रेयांश सिंह द्वारा किया गया है। इतालवी मूल के लेखक और यात्री निकोलाओ मनुची ने प्रत्यक्षदर्शी घटना का उल्लेख किया है जिसमें जाटों ने दिवंगत सम्राट अकबर के मकबरे को जला

दिया और उनके अवशेषों को आग में झुलसा दिया। कुछ लोग कहते हैं कि यह घटना 28 मार्च 1688 को घटी थी।

ईश्वरदास नागर (जन्म 1654, पाटन गुजरात से) फतूहात–ए आलमगिरी के लेखक ने औरंगजेब के शासनकाल के बारे में लिखा और उल्लेख किया कि राजा राम के नेतृत्व में जाटों ने अकबर के मकबरे को लूटा और तहस–नहस कर दिया और फिर उनके अवशेषों को जला दिया।

तत्कालीन ब्रिटिश वायसराय और भारत के गवर्नर–जनरल लॉर्ड कर्जन के अधीन अकबर के मकबरे की मरम्मत का कार्य 1805 में शुरू हुआ (यह प्राचीन स्मारक अधिनियम, 1904 के अंतर्गत था)। अगले वर्ष (1806) सर थॉमस रैले, केसीएसआई (जो गवर्नर–जनरल की परिषद के सदस्य थे) द्वारा लिखित "लॉर्ड कर्जन इन इंडिया" नामक पुस्तक प्रकाशित हुई, जिसमें कहा गया है कि "मकबरा लगभग 150 वर्षों तक अपनी ऊपरी मंजिलों के बिना रहा, क्योंकि ऐसा माना जाता है कि भरतपुर के जाटों के आक्रमण में वे नष्ट हो गई थीं।"

वीरवर राजाराम

ठाकुर देशराज ने कहा कि गोकुला का खून नहीं बदला गया। जात दांत पीसते थे, वे मुगलों का ध्वजारोहण करने के लिए उन्मत्त हो रहे थे। उन्हें केवल उपयुक्त नेताओं की तलाश थी। सच्च असलियत में पूरी होती हैं – यह सिद्धांत उन्हें एक सरदार मिल के अनुसार दिया गया है। सिनसिनी के भज्जीसिंह के रणबाँके पुत्र राजाराम ने विद्रोही जाटों का नेतृत्व ग्रहण किया। राजाराम ने सिनसिनवार जाटों का, रामकी इच्छार की बस्ती में, सोगरिया जाटों के साथ–साथ सोगर के किलो के पास निवास किया और संगठित किया। उन्होंने बंदुकों का संग्रह किया और बाकी हिस्सों में कच्चे दुर्ग चव्हानियां के सदस्यों की भूमिका निभाई। सबसे मुख्य शिक्षा उन्होंने विद्राहियों को यह दी कि वे अपने सेनानायकों की आज्ञापालन में त्रुटिपूर्ण न आएं। उसने विश्रृंखलित जाति को जोड़कर आक्रमणकारी के साथ ही चतुर सैनिकों को बनाया। एक सिकंदरा स्थित अकबर के मकबरे को राजा राम ने लूट लिया था।

गोकुला की मृत्यु के ठीक पन्द्रह वर्ष बाद जाटों ने राजाराम की राजधानी मुगलों को दंड देने के लिए आगरे पर आक्रमण कर दिया। आस–पास के सारा प्रदेश पर उनका अधिकार हो गया। आगरा जिले से मुगल–शासन का अंत कर दिया। सड़कें बंद हो गईं। मुगल–हाकिम सफीखां ने किले पर कब्जा कर लिया और सिकंदर पर आक्रमण कर दिया। इसके तुरंत बाद ही धौलपुर के करीबी अगरखां तूरानी को जा घेरा और उसके घोड़े–घोड़ी तक, यहां तक कि औरतों को भी छीन लिया गया।

1. जो मुगल सेना साधारण जाट बालाओं को न पकड़ सकी थी, सबने जौहर कर लिया था।

जाट इतिहासः ठाकुर देशराज, पृष्ठान्त–635

इस युद्ध में अरखां और उसके मित्र मारे गए। उसकी लड़की, औरतें जाटों के हाथ लगी। मई सन् 1686 ई. सफदरजंग में राजाराम का मुकाबला हुआ, डुबा पिपरे को भागना पड़ा और अपने बेटे आजमखां को कोलकता के लिए भेजना पड़ा। आजमखां के आने से पहले ही राजाराम ने सिकंदरा पर आक्रमण कर दिया था। मुगलों के 400 आदमियों ने जहन्नुमरशीद कर दिया और शाइस्ताखां ने आगरे के सेंचुरीदार को यहीं आकर पूर्व अकबर की कब्र खोद दी और उसके अवशेषों को अग्नि में दफन कर दिया। उसने सोने के चांदी के बर्तन, चिराग और दूसरे को हाथ में नहीं लिया। केवल औरंगजेब का अपमान करने के लिए जिसने गोकुला का वध किया था, उसने अकबर की समाधि को आवश्यक क्षति पहुँचाई।

मुगलों की नाक में दम करने के कारण राजाराम की धाक यहीं तक पहुंच गई थी कि जब शेखों और चौहानों में युद्ध हुआ तो चौहानों ने अपनी सहायता के लिए राजाराम को बुलाया। उन्होंने बीजल गांव के युद्ध में चौहानों को मदद दी। इसी युद्ध में चार जुलाई सन् 1688 ई. राजाराम की एक मुगल सैनिक की गोली से मौत हो गई। ऐसा कहा जाता है कि सिनसिनी पर जब वेदारावख्त ने कहा कि वह युद्ध में मारा गया था। उनकी मृत्यु का समय सभी लेखकों ने सन् 1688 ई. में बताया है।

सर्वखाप द्वारा अकोला में अलेक्जेंडर विजय दिवस मनाया गयाः

27 फरवरी 2026 चाहर खाप भारतवर्ष के आनोडिया में चाहरावती क्षेत्र के अकोला में सिकेरा विजय दिवस की 338वीं जयंती पर दिनांक 27 फरवरी 2026 को भव्य एवं ऐतिहासिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें चाहरावती क्षेत्र के साथ–साथ आगरा जिले और ब्रिज क्षेत्र के विभिन्न समाजों के लोगों ने भागीदारी की। सिकंदरा विजेता वीर रामकी चाहर और राजाराम जाट की शौर्य गाथा से सहृदय लोग रोमांचित हो उठे।

स्वागत उद्बोधन

चाहर खाप भारतवर्ष के संयोजक डॉक्टर सुरेश चाहर द्वारा किया गया। मुख्य अतिथि चौधरी शेरसिंह रहे। कार्यक्रम में प्रस्ताव कर निम्नलिखित मांगे रखी गईं:

1. सिकंदरा परिसर में वीर राम की इच्छा और राजाराम जाट की अश्वरोही प्रतिमा की स्थापना की गई।

2. सिकंदरा मेट्रो स्टेशन का नाम वीर रामकी खोज के नाम पर रखें।
3. विश्वविद्यालय और माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के पाठ्यक्रमों में दोनों वीरों की शौर्य गाथाएं शामिल हैं।
4. कार्यक्रम का संचालन उत्तराखंड खाप के प्रधान संरक्षक दुलार सिंह बाबूजी ने किया।

सिकंदरा विजय दिवस एवं होली मिलन समारोह 27 फरवरी 2026, दिन शुक्रवार को मनीराम रेस्टलेस गार्डन, अकोला (आगरा) का कार्यक्रम समग्र कुंआरी क्षेत्र एवं जाट समाज आगरा द्वारा आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम में जाट समाज कल्याण परिषद के अध्यक्ष जंडेल सिंह राणा, मलूक सिंह राणा, अधिवक्ता पूर्ण सिंह राणा, इंजीनियर रणवीर सिंह शामिल हुए। इस अवसर पर साझीदार दुर्ग पर आयोजित कार्यक्रम (महा भीम सिंह राणा जयंती महोत्सव एवं अखिल भारतीय किसान राणा मेला दिनांक 27 मार्च 2026 दिन शुक्रवार) में सम्मिलित समूह को आमंत्रित किया गया।

भगवान श्री कृष्ण जी महाराज के वंशज यदुवंशी जाट महाबलिदानी वीर शिरोमणि राजा श्री ठाकुर राजाराम जी जाट के बलिदान दिवस पर गौरवपूर्ण श्रृद्धांजलि अर्पित करते है।

भाई सुरेन्द्र सिंह मलिक, इलैक्ट्रोनिक्स सीनियर इंजिनियर की एक अविस्मरणीय विभूति/व्यक्तित्व

– बी.एस. गिल, महासचिव
जाट सभा (मो० 9888004417)

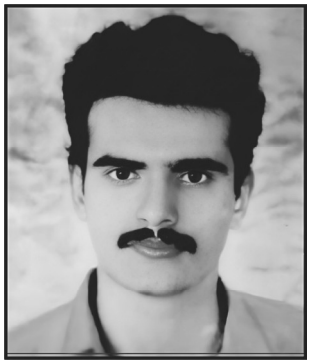

भाई सुरेन्द्र सिंह मलिक का जन्म 4 जुलाई 1970 को हरियाणा के गांव शामलो कलां, जिला जीन्द में एक प्रतिष्ठ जाट परिवार में हुआ। इनके पिता जी का नाम डॉ० महेन्द्र सिंह मलिक, आई.पी.एस., जो हरियाणा के डी.जी.पी. पद से दंबग प्रशासक के रूप में सेवानिवृत हो चुके है। जो आजकल जाट सभा चण्डीगढ़, पंचकूला व कटड़ा के प्रधान होने के साथ–साथ कई अन्य संस्थाओं के प्रधान भी है और कई सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हुये है। जिनकी अच्छी व साकारात्मक सोच और कुशल मार्गदर्शन के कारण ही ये संस्थाएं बहुत ही सराहनीय कार्य कर रही हैं।

भाई सुरेन्द्र सिंह मलिक की माता जी का नाम श्रीमती कृष्णा मलिक है जो शिक्षित व गुणवती होने के साथ–साथ सुशील स्वभाव की है वे भी महिलाओं की कई संस्थाओं की प्रधान रही हैं जैसे गुरूकल खानपुर कलां के प्रधान होने के दौरान इनके और डॉ० एम.एस. मलिक के प्रयासों से लॉ कॉलेज और नर्सिंग कॉलेज की स्थापना हुई।

भाई सुरेन्द्र सिंह मलिक होनहार व सुशील स्वभाव व बड़े दयालु हृदय के होने के साथ–साथ शुरू से ही पढ़ाई में रूचि लेते थे तथा अपनी कक्षा में प्रथम आते थे और खेलों में भी अग्रणीय रहते थे। इनकी पढ़ाई में लग्न होने व इनकी मेहनत के कारण ही पैक इंजिनीयरिंग कॉलेज, चण्डीगढ़ जैसी अच्छी संस्था में दाखिला मिला और वहां से इन्होंने अच्छे अंकों से इंजिनियरिंग की डिग्री हासिल की। इसके बाद इनको जिन्दल स्टील लिमिटेड कम्पनी, हिसार में सीनियर इंजिनियर के पद पर नौकरी मिल गई। यहां इन्होंने अपनी नौकरी के दौरान अपने सीनियर तथा स्टाफ के साथ बहुत ही अच्छा तालमेल रखा। वो 19 जुलाई 1993 को हिसार से चण्डीगढ़ आ रहे थे, भगवान को पता नहीं क्या मंजूर था, उनकी अम्बाला–चण्डीगढ़ के बीच में अचानक दुर्घटना में मृत्यु हो गई। जो एक बहुत ही शौकाकुल व दर्दनाक स्थिति पैदा कर गई। उस समय इनकी आयु 23 वर्ष की थी। ये अपनी पूरी भरपूर जवानी में थे। इस चढ़ती जवानी में कई महान आत्माएं भगवान को प्यारी हुई है जैसे लोरेंश नाईटिंगगेल, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई व ग्रेट अलक्जेडर स्वामी विवेकानन्द आदि।

उन्होंने अपनी अल्प आयु के दौरान ही उच्च व सर्वोच्च विचार और मानवता व ईन्सानियत को अपना रखा था। एक होनहार और अच्छे विद्यार्थी होने के नाते उनकी याद में जाट सभा चण्डीगढ़ द्वारा हर वर्ष 4 जुलाई को राष्ट्रीय स्तर पर निबन्ध प्रतियोगिता करवाई जाती है। इसमें प्रथम, द्वितीय और तृतीय आने वाले बच्चों को 5100, 3100 तथा 2100 रुपये नगद तथा साथ में शिल्ड भी ईनाम के रूप में तथा 1500, 1000, 900 व 600 रुपये सांत्वना पुरस्कार भी दिये जाते हैं।

शिक्षा और खेल के क्षेत्र में ग्रामीण आंचल के बच्चे बड़ी उपलब्धियां छूए, इस सोच के साथ हरियाणा के पूर्व पुलिस

महानिदेशक यानि डी.जी.पी. डॉ० महेन्द्र सिंह मलिक ने 1988 में जींद से महज 11 किलोमीटर की दूरी पर स्थित गांव निडानी में 10X10 साईज के 10 कमरो के साथ चौधरी भरत सिंह मेमोरियल खेल स्कूल निडानी की स्थापना की थी और ग्रामीण क्षेत्र की लड़कियों के उज्जवल भविष्य को देखते हुए डॉ महेंद्र सिंह मलिक व सरपंच दलीप सिंह ने सन 1994 में लड़कियों के लिए अलग से भाई सुरेंद्र मलिक मेमोरियल गर्ल्स स्पोर्ट्स स्कूल की भाई सुरेन्द्र की याद में स्थापना की। दोनों संस्थाएं 21 एकड़ स्थान में फैली हुई है। खेलों के विकास के लिए विद्यालय में 2010 में खेल छात्रावास की भी स्थापना की गई। जिसमें सीनियर खिलाड़ी रहकर अपने खेल का अभ्यास करते हैं। दोनों संस्थाओं ने चेयरपर्सन मधुर भाषी श्रीमती कृष्णा मलिक के कुशल नेतृत्व में दसवीं तथा बारहवीं के छात्र एव छात्राओं का परिणाम उत्कृष्ट आते है। इस लिए हमारा लक्ष्य हर विद्यार्थी को श्रेष्ट शिक्षा, संस्कार और उज्ज्वल भविष्य देने के साथ–साथ खेलों में भी, इन संस्थाओं ने अपनी एक अलग ही पहचान बना ली है। एशियन गेम्स कॉमन वेल्थ गेम्स हो या खेल की कोई भी प्रतियोगिता हो, इन संस्थाओं के खिलाड़ियों ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विशेषकर कुश्ती कबड्डी एथलेटिक्स के साथ–साथ अन्य खेलों में आज तक 72 स्वर्ण पदक 58 रजत पदक तथा 50 से अधिक कांस्य पदक जीतकर भारतीय तिरंगे की शान बढ़ाई है। खेलों के क्षेत्र में वर्ष 2023 के लिए सर्वोच पुरस्कार अर्जुन पुरस्कार के लिए इस विद्यालय की तीन खिलाड़ियों में से एक सरिता मोर, अंशु मलिक कुश्ती खेल के लिए तथा साक्षी पुनिया का कबड्डी में चयन हुआ था, जो कि एक रिकॉर्ड कॉमन है। इससे पूर्व किसी भी विद्यालय के तीन खिलाड़ियों को एक साथ पुरस्कार नहीं मिला। देश की राष्ट्रपति द्रौपदी मुरमु ने तीन महिला खिलाड़ियों को हाल ही में अर्जुन अवॉर्ड से सम्मानित किया है। एक साथ तीन खिलाड़ियों का अर्जुन अवॉर्ड के लिए चयन होना इस संस्था के लिए बहुत ही गौरव की बात है वहां जीन्द क्षेत्र ही नहीं सारे देश भर के लिए गर्व की बात है।

विद्यालय के तीन पहलवान हरदीप ढिल्लो, अंशु मलिक और सीमा मिश्रा क्रमशः 2016 तथा 2021 ओलंपिक में देश का नेतृत्व कर चुके हैं। विद्यालय की कुश्ती खिलाड़ी आंशु मलिक भारत की पहली महिला कुश्ती खिलाड़ी है। जिसने सीनियर वर्ल्ड कप कुश्ती चैम्पियनशिप 2021 में सिल्वर मेडल प्राप्त किया तथा 2022 कॉमनवेल्थ में भी सिल्वर मेडल प्राप्त किया। अब तक इस खिलाड़ी ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इस तरह मैडल प्राप्त किए हैं। सरिता मलिक 2022 में एशियन कुश्ती चैंपियनशिप में गोल्ड मेडल सहित अब तक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 15 मेडल प्राप्त कर विश्व के नंबर वन महिला कुश्ती पहलवान होने का गौरव प्राप्त किया है। प्रिया मलिक ने विश्व जूनियर कुश्ती प्रतियोगिता 2022 में सिल्वर मेडल व विश्व कैडर कुश्ती प्रतियोगिता में गोल्ड मेडल तथा हंगरी की राजधानी बुडापेस्ट में 17 से 20 जुलाई 2025 तक आयोजित हुई विश्व कुश्ती चैंपियनशिप में प्रिया मलिक ने 76 किलोग्राम भारवर्ग में शानदार प्रदर्शन करते हुए सिल्वर मैडल अपने नाम किया। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 7 मेडल प्राप्त किए हैं।

उपरोक्त के अतिरिक्त मीनाक्षी गोयल ने विश्व कैडेट कुश्ती प्रतियोगिता में सिल्वर मेडल ममता सिहाग ने एशियन सब जूनियर में गोल्ड मेडल सुदेश ने केरला मे एशियन चौंपियनशिप 2002 में सिल्वर मेडल, संगीता ने वर्ल्ड स्कूल कुश्ती प्रतियोगिता में गोल्ड मेडल, सोनिया ढाका, निशा मलिक, हनी मलिक, मान सिंह मलिक, अंजली, अंजू, नैना, पूजा देशवाल सहित अनेक कुश्ती खिलाड़ियों ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मेडल प्राप्त कर विद्यालय व देश का गौरव बढ़ाया है।

विद्यालय के एथलेटिक्स खिलाड़ी मनीष ने यूथ एशिया लाइट इस चैम्पियनशिप 2017 थाईलैंड में गोल्ड मेडल प्राप्त किया। कबड्डी खेल में खिलाड़ी जगपाल नरवल ने एशियन कबड्डी चौंपियनशिप 2005, 2007, 2008 और 2010 में गोल्ड मेडल प्राप्त किया है। पर वजीर धूल जूनियर एशियन कबड्डी चौंपियनशिप 2015 साउथ एशियन कबड्डी में गोल्ड मेडल प्राप्त किया। 2010 के एशियन गेम्स में कबड्डी खिलाड़ी मनीषा दलाल जो कि उस समय 12वीं कक्षा की छात्रा थी उसने गोल्ड मेडल प्राप्त किया। 2014 के एशियन गेम्स दक्षिणी कोरिया में कविता सिवाच तथा 2017 एशियाड कबड्डी प्रतियोगिता में साक्षी पुनिया ने गोल्ड मेडल प्राप्त कर भारतीय तिरंगे की शान बढ़ाई। उपरोक्त खेलों की उपलब्धियों के आधार पर हजारों खिलाड़ी केंद्र व राज्य सरकारों के विभाग रेलवे, हरियाणा पुलिस, पंजाब पुलिस, पैरामैट्रिक, बीएसएफ, सीआईएसएफ, आईटीबीपी में खेलों के आधार पर पदों पर सेवारत है खेलों के साथ–साथ दोनों विद्यालयों के छात्र–छात्राएं शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रतिवर्ष बोर्ड की मेरिट सूची में अपना स्थान बनाते आ रहे हैं विद्यालय की छात्रा कुमारी ज्योति मलिक ने हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड की दसवीं की परीक्षा में पूरे राज्य में सातवें स्थान पर रहकर बोर्ड की टॉप 10 सूची में अपनी जगह बनाई थी गत वर्ष 2021 में विद्यालय का वार्षिक परीक्षा परिणाम बहुत ही शानदार रहा। विद्यालय के दसवीं कक्षा के 18 छात्र छात्राओं तथा 12वीं कक्षा के छात्र छात्राओं ने मेरिट प्राप्त कर विद्यालय का नाम रोशन किया वर्तमान में इस विद्यालय की कबड्डी खिलाड़ी ने 15 नवंबर

2022 को हेलीकॉप्टर से 10000 फुट की छलांग लगाकर सेना की पहली महिला स्काई डाइवर गौरव प्राप्त किया।

इन दोनों संस्थाओं के अलावा वर्ष 2022 में एक तीसरी चौ० भरत सिंह मैमोरियल डिफेंस अकेडमी के नाम से स्थापित की गई। चौधरी भरतसिंह मेमोरियल डिफेन्स एकेडमी ने मात्र 6 महीने में रचा इतिहास

चौधरी भरत सिंह मेमोरियल खेल स्कूल निडानी के खिलाड़ी लगातार अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा रहे हैं इसके साथ–साथ संस्था में 29 दिसम्बर 2022 से चौधरी भरत सिहं मैमोरियल डिफेन्स एकेडमी शुरु की गई। जिसका शुभारम्भ मेजर जनरल जोगेंद्र सिंह नेहरा के द्वारा किया गया। चौधरी भरत सिंह डिफेंस एकेडमी में वर्ष 2023 में प्रेक्टिस करने वाले कुल 38 विद्यार्थियों में से विभिन्न पदों पर 18 विद्यार्थियों का चयन हुआ। मात्र 6 महीने के अपने कार्यकाल में 18 विद्यार्थियों का चयन होने से संस्था ने नयां कीर्तिमान स्थापित किया है। इस वर्ष 23 अप्रैल 2024 को इसी एकेडमी के 37 विद्यार्थियों ने सेना भर्ती के लिए लिखित परीक्षा दी जिसमें 35 बच्चों का टैस्ट क्लीयर हुआ जो की काबिले तारीफ है। अब ये सभी विद्यार्थी अपने फिजिकल के टैस्ट की तैयारी में लग गए है जो सभी का अलग–अलग तारीखों में अलग–अलग जगह पर होगा। इन संस्थाओं के छात्र–छात्राओं ने वर्ष 2025 तथा 2026 के दौरान भी विभिन्न खेलों में गोल्ड मैडल प्राप्त करने की उपलब्धी प्राप्त की है।

इन तीनों संस्थाओं के संरक्षक डॉ महेंद्र सिंह मलिक चेयरपर्सन श्रीमती कृष्णा मलिक, सचिव रणधीर सिंह, चौधरी दिलीप सिंह, सुखबीर सिंह पंघाल के कुशल नेतृत्व व मार्गदर्शन में अध्यापकों व प्रशिक्षकों की मेहनत से यह तीनों संस्थाएं दिन दुगनी रात चौगुनी उन्नति कर रही है।

स्वतन्त्रता सेनानी तथा आजीवन ईमानदार की मिशाल

गुलजारी लाल नन्दा

– लक्ष्मण सिंह फौगाट, (मो० 6280830760)

13–13 दिन के दो बार कार्यवाहक प्रधानमंत्री भी रहे फिर भी... पूरी जिंदगी ईमानदारी की मिसाल बने! आखिर कौन थे गुलजारीलाल नंदा? भारतीय राजनीति के इतिहास में कुछ ऐसे नाम हैं जिन्हें उनके पद से नहीं, बल्कि उनके चरित्र से याद किया जाता है। गुलजारीलाल नंदा उन्हीं विरले नेताओं में शामिल हैं। वह भारत के ऐसे प्रधानमंत्री रहे जिन्होंने दो–दो बार देश की सबसे बड़ी कुर्सी संभाली, लेकिन कभी उस कुर्सी को अपना अधिकार नहीं समझा। उन्होंने सत्ता को सेवा माना और राजनीति को राष्ट्र निर्माण का माध्यम। यही कारण है कि जब देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू का निधन हुआ और पूरा देश अनिश्चितता में था, तब जिम्मेदारी संभालने के लिए जिस व्यक्ति पर सबसे पहले भरोसा किया गया, वह थे गुलजारीलाल नंदा। कुछ ही वर्षों बाद जब लाल बहादुर शास्त्री का अचानक निधन हुआ, तब भी देश ने संकट की घड़ी में उसी ईमानदार व्यक्ति की ओर देखा गया। लेकिन हैरानी की बात यह है कि दो बार प्रधानमंत्री बनने वाले इस नेता को इतिहास ने उतनी जगह नहीं दी, जितनी शायद उन्हें मिलनी चाहिए थी।

क्या आपको पता है... भारत की पहली पंचवर्षीय योजना लिखने वाले भी वही थे?

अधिकांश लोग गुलजारीलाल नंदा को केवल 13–13 दिन के लिए दो बार कार्यवाहक प्रधानमंत्री के रूप में जानते हैं, लेकिन बहुत कम लोगों को यह जानकारी है कि स्वतंत्र भारत की आर्थिक दिशा तय करने वाली पहली पंचवर्षीय योजना तैयार करने में उनकी केंद्रीय भूमिका थी। अर्थशास्त्र के विद्वान नंदा का मानना था कि भारत का विकास केवल उद्योगों से नहीं, बल्कि मजदूरों, किसानों और आम नागरिकों के जीवन स्तर को बेहतर बनाकर ही संभव है। उन्होंने योजना आयोग में रहते हुए देश के विकास की ऐसी सोच विकसित की, जिसने आने वाले कई दशकों तक भारत की आर्थिक नीतियों की नींव रखी। उनके विचारों में समाजवाद, श्रमिक कल्याण और समान अवसर की भावना साफ दिखाई देती थी।

सियालकोट से शुरू हुआ सफर... जिसने उन्हें गांधीजी का सबसे भरोसेमंद साथी बना दिया

4 जुलाई 1898 को अविभाजित भारत के सियालकोट (आज पाकिस्तान में) में जन्मे गुलजारीलाल नंदा बचपन से ही पढ़ाई में तेज थे। उन्होंने लाहौर, अमृतसर, आगरा और इलाहाबाद में शिक्षा प्राप्त की। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र का अध्ययन करते हुए उनकी सोच समाजवादी विचारधारा की ओर झुकने लगी। वर्ष 1921 में महात्मा गांधी से मुलाकात ने उनकी पूरी जिंदगी बदल दी। गांधीजी के आह्वान पर उन्होंने आरामदायक शिक्षक का जीवन छोड़ दिया और स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पड़े। असहयोग आंदोलन से लेकर

भारत छोड़ो आंदोलन तक उन्होंने कई बार जेल की यातनाएं झेलीं, लेकिन कभी अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं किया।

मजदूरों का मसीहा... जिसने कारखानों की आवाज को संसद तक पहुंचाया

गुलजारीलाल नंदा का सबसे बड़ा योगदान केवल राजनीति में नहीं बल्कि श्रमिक अधिकारों की लड़ाई में था। अहमदाबाद टेक्सटाइल लेबर एसोसिएशन के सचिव के रूप में उन्होंने लगभग ढाई दशक तक मजदूरों के हितों के लिए काम किया। महात्मा गांधी और अनसूयाबेन साराभाई के साथ मिलकर उन्होंने भारत के सबसे पुराने टेक्सटाइल मजदूर संगठन को मजबूत बनाया। उनका विश्वास था कि किसी भी राष्ट्र की वास्तविक ताकत उसके श्रमिक होते हैं। उन्होंने श्रम विवाद कानूनों को मजबूत किया, अंतरराष्ट्रीय श्रम सम्मेलनों में भारत का प्रतिनिधित्व किया और यूरोप के कई देशों का अध्ययन कर भारत में श्रमिक कल्याण की आधुनिक नीतियों को लागू करने की कोशिश की।

दो बार प्रधानमंत्री बने... लेकिन सत्ता से कभी प्रेम नहीं किया

27 मई 1964 को जब जवाहरलाल नेहरू का निधन हुआ तो पूरी दुनिया की निगाहें भारत पर थीं। चीन युद्ध के बाद का दौर था, देश राजनीतिक अस्थिरता और खाद्य संकट से गुजर रहा था। ऐसे कठिन समय में गृह मंत्री होने के नाते गुलजारीलाल नंदा ने कार्यवाहक प्रधानमंत्री की जिम्मेदारी संभाली। लेकिन जैसे ही कांग्रेस संसदीय दल ने लाल बहादुर शास्त्री को नेता चुना, उन्होंने बिना किसी विरोध के पद छोड़ दिया।

फिर जनवरी 1966 में ताशकंद समझौते के तुरंत बाद लाल बहादुर शास्त्री के अचानक निधन से देश फिर संकट में आ गया। एक बार फिर नंदा को प्रधानमंत्री बनाया गया। इस बार कई वरिष्ठ नेताओं ने उन्हें स्थायी प्रधानमंत्री बनने के लिए भी प्रेरित किया, लेकिन उन्होंने साफ कह दिया कि वह सत्ता की दौड़ का हिस्सा नहीं बनना चाहते। उनके लिए प्रधानमंत्री की कुर्सी कोई उपलब्धि नहीं थी, बल्कि देश की जिम्मेदारी थी। जैसे ही इंदिरा गांधी को कांग्रेस ने अपना नेता चुना, नंदा ने तुरंत पद छोड़ दिया। भारतीय राजनीति में ऐसा त्याग आज भी दुर्लभ माना जाता है।

भ्रष्टाचार के खिलाफ इतनी सख्ती... कि अपनी ही पार्टी को खटकने लगे

गुलजारीलाल नंदा का सबसे बड़ा अपराध शायद उनकी ईमानदारी थी। वह भ्रष्टाचार के खिलाफ किसी भी प्रकार का समझौता स्वीकार नहीं करते थे। चाहे कोई बड़ा नेता हो या अधिकारी, गलत काम पर उनकी प्रतिक्रिया हमेशा कठोर होती थी। धीरे–धीरे कांग्रेस के भीतर ऐसे कई लोग उनसे असहज होने लगे जिन्हें उनकी साफ–सुथरी राजनीति पसंद नहीं थी। कहा जाता है कि उनकी बेबाक छवि और भ्रष्टाचार विरोधी रुख के कारण ही पार्टी के कई प्रभावशाली नेता उनसे दूरी बनाने लगे। बाद के वर्षों में उन्होंने आपातकाल का भी खुलकर विरोध किया और अंततः कांग्रेस से इस्तीफा दे दिया, क्योंकि उनके अनुसार लोकतंत्र की रक्षा किसी भी राजनीतिक दल से बड़ी जिम्मेदारी थी।

इतने सिद्धांतवादी थे कि पोते को सरकारी कागज पर चित्र बनाने तक नहीं दिया

गुलजारीलाल नंदा के जीवन से जुड़ा एक प्रसंग उनकी ईमानदारी की सबसे बड़ी मिसाल माना जाता है। एक दिन उन्होंने देखा कि उनका छोटा पोता सरकारी कार्यालय के कागज पर चित्र बना रहा है। उन्होंने तुरंत उसे रोका और बाजार जाकर अपने पैसे से ड्राइंग पेपर खरीदकर लाए। उनका कहना था कि सरकारी सामान जनता की संपत्ति है और उसका निजी उपयोग करना चोरी के समान है। आज जब सरकारी संसाधनों के दुरुपयोग की खबरें आम हो चुकी हैं, तब यह घटना बताती है कि सार्वजनिक जीवन में नैतिकता कैसी होती है।

दो बार प्रधानमंत्री बनने के बाद भी नहीं था अपना घर... आखिर क्यों?

यह शायद भारतीय राजनीति की सबसे मार्मिक घटनाओं में से एक है। दो बार देश का प्रधानमंत्री बनने वाला व्यक्ति अपने जीवन के अंतिम वर्षों में दिल्ली के डिफेंस कॉलोनी स्थित किराए के मकान का किराया तक नहीं चुका पाया। मकान मालिक ने उन्हें घर खाली करने के लिए कह दिया। उनके पास न कोई निजी संपत्ति थी, न जमीन, न आलीशान बंगला और न ही धन–संपत्ति का कोई भंडार। अंततः वह अपनी बेटी के पास अहमदाबाद रहने चले गए। जब यह खबर मीडिया में आई तो प्रधानमंत्री कार्यालय ने उन्हें सरकारी आवास और सुविधाएं देने की पेशकश की, लेकिन उन्होंने यह कहते हुए मना कर दिया कि उन्होंने देश की सेवा किसी लाभ के लिए नहीं की थी। उन्होंने स्वतंत्रता सेनानी पेंशन तक लेने से लंबे समय तक इनकार किया था। अंततः बहुत आग्रह के बाद उन्होंने मात्र 500 रुपये की पेंशन स्वीकार की और एक छोटा सा सरकार का मकान।

सम्मान मिला... लेकिन बहुत देर से

गुलजारीलाल नंदा को जीवनभर जितना सम्मान मिलना चाहिए था, उतना नहीं मिला। राजनीति बदलती गई, विचारधाराएं बदलती गईं और ईमानदारी की मिसाल बने इस नेता का नाम

लोगों की निंदा से परेशान होकर अपना रास्ता कभी ना बदलना क्योंकि सफलता शर्म से नहीं साहस से मिलती है।

धीरे–धीरे इतिहास के पन्नों में सिमट गया। अंततः 1997 में भारत सरकार ने उन्हें देश का सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न प्रदान किया। इससे पहले उन्हें पद्म विभूषण से भी सम्मानित किया जा चुका था। लेकिन यह सम्मान तब मिला जब वह जीवन के अंतिम पड़ाव पर थे। 15 जनवरी 1998 को उन्होंने इस दुनिया को अलविदा कह दिया। वह अपने पीछे न कोई राजनीतिक विरासत छोड़ गए, न कोई आर्थिक साम्राज्य। उन्होंने छोड़ी तो केवल एक ऐसी विरासत, जिसे ईमानदारी, सादगी और राष्ट्रसेवा कहा जाता है।

आज क्यों याद किए जाने चाहिए गुलजारीलाल नंदा?

आज जब राजनीति में पद, प्रचार और शक्ति सबसे बड़ी उपलब्धि मानी जाती है, तब गुलजारीलाल नंदा का जीवन हमें याद दिलाता है कि सार्वजनिक जीवन का वास्तविक उद्देश्य सत्ता नहीं, बल्कि सेवा होता है। उन्होंने दिखाया कि प्रधानमंत्री बनने से बड़ा काम प्रधानमंत्री पद छोड़ देना भी हो सकता है, यदि उसके पीछे राष्ट्रहित और लोकतंत्र की भावना हो। मजदूरों के अधिकार, भ्रष्टाचार के खिलाफ संघर्ष, गांधीवादी जीवनशैली, सादगी और नैतिक राजनीतिकृये सब उनके जीवन की ऐसी पहचान हैं जिन्हें नई पीढ़ी को जानना चाहिए। शायद यही कारण है कि इतिहास के सबसे ईमानदार प्रधानमंत्रियों की सूची बने तो गुलजारीलाल नंदा का नाम सबसे ऊपर दिखाई देगा।

ऐसे महान नेता स्वतन्त्रता सैनिक जीवनभर ईमानदारी के पात्र की पड़ने वाली जयन्ती पर शत्–शत् नमन!

सत्तावन के समर में आगे जवान, पीछे किसान

– सूरजभान दहिया (मो० 9818120950)

हिन्द के 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के बारे में विश्वविख्यात इतिहासकार डार रिम्पल स्वीकार करते हैं कि "1857 का जनसमर किसी भी यूरोपीय शासनकाल के संदर्भ में महानतम क्रांति थी और यह भारतीयों की देशभक्ति के प्रति समर्पण का अद्वितीय ऐतिहासिक घटना है। ऐसी मिसाल विश्व इतिहास में कहीं नहीं मिलती।" विस्मृति के गर्भ में क्यों खो गए हैं, स्वतंत्रता के नरमेघ के सेनानायक? इस पर डार रिंपल भारतीय सुस्त इतिहासकारों को जिम्मेदार मानते हैं। वैसे शोध और अनुसंधान की द्रष्टि से 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के जवानों और किसानों की शाहादत को 10 मई को राष्ट्रीय बलिदान के रूप में मनाना चाहिए। इसकी महत्वता 15 अगस्त से कहीं अधिक है। 1857 की क्रांती की भावनाओं को सिर्फ लाल बहादुर शास्त्री ने 1965 में समझा था तथा प्रधान मंत्री ने अपने केवल एक राष्ट्र के नाम संदेश में अपने अंत करण से 'जय जवान जय किसान' का उद्घोस किया था। इस महान क्रांती को सलाम। इस विप्लव ने स्वतंत्रता की जो अदम्य इच्छा पैदा कर दी, उसने लोगों को आने वाले 90 वर्षों तक लडने का बड़ा हौसला दिया।

1857–2026 अंतराल अर्थात जनक्रांति के 169वीं वर्षगांठ पर हमें इस बात पर गोर करने की जरूरत है कि आखिरकार इस क्रांति में ऐसी क्या खास बात थी जिसने लड़ाई के जज्बे को जीवित और ज्लवंत रखा और अनन्ततः 1947 में अंग्रेजों को बाहर छोड़कर जाना पड़ा। इस क्रांति ने जनसाधारण स्वाभिमान को राष्ट्रीय स्वाभिमान में परिवर्तित कर दिया था। मेरठ छावनी में किसान परिवार से आये सैनिकों में एक धारणा धर कर गई थी "अपनी नियति का स्वयं निर्धारण का पवित्र संकल्प।" जब ये धारणा प्रबल हो उठी तो इसने स्वतन्त्रता की ज्वाला का रूप ले लिया। कोई दस हजार सैनिकों ने 'दिल्ली चलो' का निर्णय लिया और वे दिल्ली की ओर आजादी पाने हेतु चल पड़े। किसानों के घर में सदैव शहीदों को पौध जन्म लेती रही हैं। जब ये आजादी के मतवाले सिपाही जिस गांव से गुजरते वहां के हाली–पाली व सभी गांववासी उनके साथ जुड़ जाते और 12 मई को यह काफिला दिल्ली में लाल किले पर पहुंचा तो वहां लाखों लोगों का जमावडा था। इस अपार भीड़ को प्रथम बार लाल किले की प्राचीर से बल्लभगढ़ के नरेश नाहर सिंह ने संबोधित करते हुआ कहा – "हम भारत माता को गुलामी की बेडियों से मुक्त कर रहे हैं। खांप में पंचायते प्रशासनिक व्यवस्था को संभाले।" संपूर्ण जाट लेंड में आजादी का जोर प्रवाहित होने लगा और अंग्रेज यहां से भाग कर हिंदुस्तान जरवाड़े की पनाह में चले गए थे।

इतिहासकार जॉन विलियम ने जो उस दोर की घटनों के प्रत्यक्षदर्शी थे, 1968 में छपी अपनी पुस्तक 'सिपॉय वार इन इंडिया' में माना, 'सच तो यह है कि हिंदुस्तान में हमारी सत्ता की पुर्नस्थापना का सहारा हमारे हिंदुस्तानी रजवाडों से मिला।' विलियम रसल लंदन से छपने वाले अकबार 'द टाइम्स' के युद्ध समादाता के तौर पर युद्ध का हाल बताने के लिए भारत भेजे गए थे। उन्होंने अपनी रपट में लिखा 'यदि पटियाला और जींद रियासत से सैनिक सहायता नहीं मिलती तो जाट लैंड में हम घुस नहीं पाते।' रसल ने अपने रपटों में इस सच्चाई को भी स्वीकारा कि अगर लखनऊ और दिल्ली मौर्चा पर नेपाल के

राजा के गोरख सैनिक नहीं पहूंचते तो अंग्रेजों की जीत असम्भव थी। अतएव सन् 1957 में गद्धारों ने हरवाया था इंकलाबियों को।

वास्तव में 10 मई 1857 भारत के इतिहास का एक क्रांतिकारी मोड था। भारत मां की बेडियों से मुक्त करने के जो साहस भरी कोशिश जाटलैंड में हुई उससे अंग्रेज आगे उभर नहीं पाए। खून का कतरा बहाये बिना हमें आजादी नहीं मिली। इतिहास साक्षी है कि 1857 में जाटलैंड ऐसा कोई पेड नहीं बचा था जिस पर देश को भक्तों की लाशे न टांगी गई थी। वो वास्तव में अंग्रेजों का अहसास हो चुका था कि उनके भारत छोड़ने की जमीन जाट गाबरूओं ने तैयार कर दी थी।

जाटलैंड की महानगरी दिल्ली ने कितने ही साम्राज्यों का उत्थान–पतन देखा है। हुकूमते आई और मिट गई पर दिल्ली के चारों ओर बसे पड़े जाटलैंड के वासियों ने अपनी संस्कृति और समाजिक परंपराओं को कायम रखा। इसके लिए कई बार उन्हें भारी मूल्य भी चुकाना पड़ा। पर इनकी जुबान पर तो यही शब्द रहे, 'हरया नर हो, जाणिये जो कहे हार की बात' बर्बर आक्रांता देश की सीमाओं को पार करके दनदनोत हुए, बैरोकटोक आगे बढ़ते चले जाते थे। जब वे पानीपत और तरावडी के मैदानों में पहुचे तो उन्हें छटी का दूध याद आ जाता था। इस वीर बसुंधरा के रणबंकुरों 'हर–हर महादेव' और 'जय जवानी' का उद्‌गोस करते शत्रु से जा भिड़ते थे। अंग्रेज यहां 1803 में आये और यहां के स्वतंत्र प्रवृर्ती के लोगों ने उनकी अधीनता स्वीकार नहीं की। अंग्रेजों ने दूसरे क्षेत्रों की भांति भी यहां पर दमनचक्र प्रक्रिया शुरूकर दी। दोनों ओर से संघर्ष चलता रहा। अंततः जाटलैंड के वीरों ने 1857 का जनसंघर्ष लड़ना ही पड़ा।

हमारी मातृभूमी के सुदीर्घ इतिहास में 10 मई 1857 का दिन पवित्र दिवस है। कोई भी दिवस तब पवित्र बनता है जब राष्ट्र के लिए समर्पित कोई असाधारण ऐतिहासिक व्यक्ति – एक नायक या शहीद अथवा कोई संत या कोई समाज सुधारक उससे जुड़ा हुआ हो। यह अपवित्रता उस समय और कई गुना बढ़ जाती है जब समुचे राष्ट्र द्वारा विदेशी शासन से स्वतंत्र होने के लिए एकजूट होकर जनक्रांति का रूप ले ले। भारत के हजारों वर्षों के इतिहास में 10 मई एक ऐसी ही पुन्य पवित्र दिवस है। इस दिवस ने जनमानस में जो स्वतंत्रता के लिए प्रेरणा जागृत की, उससे लाखों लोगों ने अपने प्राणों की आहुती दी। अमरिश मिश्रा ने 1857 की क्रांति पर अपनी पुस्तक में उल्लेख किया है कि भारत की उस समय की जनसंख्या का 7 प्रतिशत भाग देश के लिए न्यौछावर हुआ। हजारों गांव उजड़े, हजारों गांवो को जलाया गया तथा न जाने कितने नर–नारियों को यातनाएं देकर मौत के घाट उतारा। संपूर्ण जाटलैंड की वीर वसुंधरा उस समय शमशान भूमि में परिवर्तित हो गई थी। देशभक्ती की यह धारा आज उन असंख्यशहीदों को नमन करते हुए उनको एक ऐतिहासिक दस्तावेज में रिकॉर्ड करने की मांग कर रही है।

शहीदों के प्रति सम्मान के संबंध में एक विवरण का उल्लेख यहां करना नितांत आवश्यक है। श्रीमती सोनिया गांधी 11 नवंबर 2005 को बलिजयम देश की यात्रा पर थी। ब्रसस्लज से कोई 430 किलोमेटर दूर एक पवित्र स्थल है। ये प्रेस यहां के मिनिन गेट पर एक वार मेमोरियल बना हुआ है। ये मेमोरियल प्रथम विश्व युद्ध भारतीय सैनिकों तथा अन्य सैनिकों की शहादत को समर्पित है। श्रीमती गांधी ने इस स्मारक पर शहीदों को नमन करते हुए अपने श्रृद्धा सुमन अर्पित किये हैं। उन्होंने यह जानकर एक सुखद अनुभूति हुई है कि यहां के लोग अपने दिनचर्या आरम्भ करने से पूर्व मिनिन गेट पर जाकर प्रतिदिन शहीदों को स्मरण करके नतमस्तक होते हैं। भारत में नई दिल्ली में आजादी के पश्चात् शहीदों का वार–मेमोरियल है और यहां पर 1857 के शहीदों का कोई वार–मेमोरियल नहीं है। एक अति दुखद अनुभूती यह है, हम में वह भावना जागृत नहीं है जो शहीदों के प्रति बल्जियम में है। मेरी तो गहरी पीड़ा यह है कि जाट समुदाय 1857 में अपने पूर्वजों के बलिदान के प्रति सचेत ही नहीं और ना ही उनमें यह निष्ठा बनी है कि वे अपने शहीद पूर्वजों का कोई स्मारक निर्मित करें। यह जिन्दा कौम को शोभा नहीं देता। मैं तो जाटवीर वसुन्धरा के कण को माथे पर लगाकर यही मनन कर लेता हूँ, "तूं ही शहीद का स्मारक है, तू खुद अमिट निशानी है", साथ ही यह मनन कर करके डर भी जाता हूँ। 2027 के जनगणना में जाटलैंड की डेम्योग्राफी से भारी परिवर्तन होना जाट समुदाय पर संकट आने का संकेत मिलेगे।

बेटी

– यशोदा, पंचकूला (मो० 9872279097)

बेटी घर का प्यार है, श्रृंगार है, हर दिल की झंकार है। शीतलता है हर घर में जंहा बेटी का दुलार है, मां बाप के दिल का करार है। सन्यासी सा जीवन इसका एक दैहलीज से दुसरी दैहलीज तक इसका ना किसी पे अधिकार है। उसकी बेटी उसकी बीवी फिर बालकों की मां है बनती रहती सदा खिली खिली वो ये उसका संस्कार है। संस्कारवान मां है जिसको मिलती उसका तो सदा ही बेड़ा पार है। बेटी को देवी जानो उसे ना अपनी पराई मानो वो सबके प्यार की हकदार है। हर बेटी को बनाओ संस्कारी फिर देखो खिली खिली महकती फूलवारी।

विश्वास और प्यार पर टिका होता है परिवार

– सुरेंद्र सिंह

बाजार में ऐसी कोई दुकान नहीं मिलती है जहां से रिश्ते खरीदे जा सकते हों। रिश्तों की केवल और केवल एक ही जगह है, और वह है परिवार। भले ही परिवार समाज की सबसे छोटी इकाई है लेकिन परिवार ही खुशहाल समाज की समृद्धि का आधार है। परिवार खुशियों का छोटा संसार है। बड़ी से बड़ी समस्याओं का समाधान भी परिवार में ही है। परिवार के सदस्य अपनी खुशियां एक–दूसरे पर कुर्बान करते हैं। परिवार में सभी सदस्य मिलजुल कर रहते हैं और एक–दूसरे के विचारों की कद्र करने के साथ–साथ अहमियत देते हैं। परिवार में छोटे से लेकर बड़े तक एक–दूसरे के साथ मर्यादा और विश्वास की डोर में बंधे होते हैं। विश्वास और प्यार परिवार की बुनियाद है। जहां विश्वास और प्यार की कमी होने लगती है तो वह परिवार बिखराव की ओर जाने लगता है और सभी संबंध समाप्त हो जाते हैं। हमारे यहां माता–पिता और बच्चों की एक–दूसरे के बिना रहने की कल्पना नहीं की जा सकती है, जबकि विदेशों में अलग–अलग रहना सामान्य बात है।

परिवार दो तरह के होते हैं, जिनमें एकल और संयुक्त परिवार शामिल हैं। संयुक्त परिवार मानें तो समाप्ति की कगार पर हैं, जबकि भारतीय संस्कृति में संयुक्त परिवार का अपना अलग ही महत्व है। यहां परिवार का मतलब बुजुर्गों को अपने साथ रखना व उनका आशीर्वाद लेना है। हमने अपने बुजुर्गों को कभी बोझ नहीं माना है। हमने सौ तीर्थ जाने से बेहतर घर में बुजुर्ग की सेवा मानी है। परिवार में बुजुर्गों की फटकार हमारे लिए शिक्षक का काम करती है। हमें सदियों से यही सिखाया है कि जिस घर में बुजुर्ग की सेवा होती है, वहां भगवान की कृपा हमेशा बनी रहती है। परिवार के सदस्य एक–दूसरे की ताकत होती है। परिवार में मां की ममता स्वरूपी छाया का आंचल हमारे सिर पर रहता है। पिता हमें वक्त के थपेड़ों से बचाता है। किसी भी दुःख को बांटने के लिए परिवार में भाई होता है। सबसे अधिक भला चाहने वाली और छोटे से छोटे दुःख में पास खड़ी होने वाली बहन होती है। बुजुर्गों के जीवन का अनुभव हमारे साथ होता है।

भाई–बहन, दादा–दादी, चाचा–चाची, ताऊ–ताई, भाई–भाभी व बुआ आदि सब रिश्ते परिवार से ही बनते हैं। परिवार एक संस्कारशाला है, जहां बच्चों के चरित्र का निर्माण होता है। परिवार में छोटे बच्चे अपने माता–पिता या बड़ों से ही सीखते हैं। ऐसे में परिवार में बड़ों के लिए यह जरूरी है कि वे घर में शराब, धूम्रपान, गुटका व तंबाकू आदि नशीली चीजों का सेवन बिल्कुल न करें, जिसका परिवार के छोटे बच्चों के जीवन पर नकारात्मक प्रभाव पड़े। परिवार में छोटा बच्चा अक्सर बड़ों की आदतों पर विशेष ध्यान देता है। वह ज्यादातर वही सीखता है जो बड़े करते हैं। ऐसे में बोलचाल में भी मर्यादित शब्दों का प्रयोग जरूरी है। वहीं दूसरी ओर परिवार में बड़ों की छोटों पर फटकार का भी बड़ा महत्व है, बड़ों से लगने वाली डांट–फटकार पर परिवार के लिए नींव का काम करती है। वर्तमान दौर में बच्चों को यह समझना जरूरी है कि बड़ों की फटकार हमेशा सही रास्ते पर चलाने की होती है।

लेकिन पिछले कई सालों से हमारे यहां परिवारों का विखंडन हो रहा है। परिवार टूटने के साथ–साथ हमारे रिश्ते भी दरक रहे हैं। विडंबना है कि जहां एक तरफ अमेरिका जैसे देश, जहां संयुक्त परिवारों की कोई अहमियत नहीं थी, वहां लोग भारतीय जीवन शैली को अपना रहे हैं, जिससे वहां संयुक्त परिवार तेजी से बन रहे हैं, वहीं दूसरी ओर समृद्ध संस्कृति और सामाजिक मयार्दा वाले भारत देश में परिवार दो व्यक्तियों का तक सीमित होते जा रहे हैं। आज हमने उसी पाश्चात्य संस्कृति वाली जीवन शैली को अपना लिया है, जिसे हमने कभी नहीं स्वीकारा। परिणाम स्वरूप माता–पिता और बच्चे अपनी–अपनी अलग दुनिया में जीने लगे हैं। परिवारों में बुजुर्गों की हालत दयनीय बनती जा रही है, जो कि सोचनीय विषय है। माता–पिता को नजरअंदाज कर छोटे–छोटे बच्चे बड़े–बड़े निर्णय स्वयं ले रहे हैं। सिकुड़ते संबंधों में बच्चे क्या कर रहे हैं, यह माता–पिता को भी मालूम नहीं होता, जबकि बड़ों के निर्णयों में उनके जीवन का लंबा अनुभव छिपा होता है, जिससे वे कई साल पहले गुजर चुके हैं और आने वाले हालातों से भी वाकिफ होते हैं। बच्चों के निर्णय पर अपनी मूक स्वीकृति देना माता–पिता की मजबूरी बन जाती है।

वर्तमान समय में परिवारों के टूटने के भी अलग–अलग कारण माने जा सकते हैं। लेकिन इनमें सबसे प्रमुख कारण माता–पिता का बच्चों से दूर–दूर रहना है, भले ही इसमें वजह कोई भी रहती हो। अलग–अलग रहने से बच्चों को सही दिशा नहीं मिल पाती। मनोचिकित्सकों के अनुसार अभिभावकों द्वारा समय नहीं देने का बच्चों के मानसिक पटल पर गहरा प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। बच्चों में चिड़–चिड़ापन

ही नहीं आता बल्कि बच्चों के मन में माता–पिता के प्रति आदर भाव भी कम हो रहा है। यहां तक बच्चे हिंसक प्रवृति के शिकार बन रहे हैं। एक तरह बच्चे परिवार से दूर हो रहे हैं। फिलहाल परिवारों का विघटन हमारे लिए सबसे बड़ी चिंता का विषय है। परिवारों का विघटन एक सामाजिक विषय है, जिसे हम सभी को गंभीरता से लेना होगा। कम से कम बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिए हमें विखंडित होते परिवारों को बचाना होगा। परिवार में सौहार्दपूर्ण माहौल बनाकर बच्चों को संस्कारों से सींचना होगा। एक अच्छे परिवार के लिए जरूरी है कि माता–पिता बच्चों के लिए समय जरूर निकालें। परिवार में एक–दूसरे की भावनाओं को समझें और परस्पर आदर करें, जो परिवार की बुनियाद है।

यादें

– सुखदीप सांगवान (मो० .....)

यादें ही तो हैं जो साथ निभाती हैं,
दिवंगत माता–पिता को भी पास ले आती हैं,
चन्द धुंधली स्मृतियों और बीते पलों में ले जाती हैं,
और वात्सल्य के साये और मित्रगणों का आभास दिलाती हैं।

ज्यों ही मन में यादों का तूफान आता है,
बीते लम्हों के स्मरण से उफान सा आता है,
माँ की गोद और पिता का साया याद आता है
दोस्तों से तकरार और बहन–भाई का प्यार याद आता है

याद आता है जवानी का दौर, वो यौवन की मदहोशी,
जीवनसाथी का साथ, वो गृहस्थी की बेहोशी,
बच्चों की किलकारी और स्नेहाभाव की गर्मजोशी,
उन मदमस्त यादों में है सुरूर–ऐ–बेहोशी

ये जीवन का सफर, कमबख्त तेजी दिखा गया,
लगता है कल की बात थी, पर उम्र ही खा गया,
अब उन सुनहरे पलों को बस जहन में है बसाया,
यादों की दस्तक ने अक्सर है रुलाया।

सुकून है कि जीवन खुशहाल और स्वस्थ है,
बच्चे जीवन की आपा–धापी में मस्त हैं,
वो पास होते हैं तो रौनक आ जाती है,
दूर होने पर फिर वही "यादें" सताती हैं।

Unsung Associate of Mahatma Gandhi Dr. Usha Mehta

(23.3.1920-11.8.2000)

- R.N.Malik
(Mob. 9911078502)

Dr Usha Mehta was another fire-brand freedom fighter and Gandhian to the backbone. She spent her entire life in spreading Gandhian thoughts and led a spartan and simple life. She was born in a village near Surat in Gujrat and her father was a district judge. The family shifted to Bombay after her father retired in 1930.

Fighting for freedom was in her blood. She was only eight years old when she led a protest march consisting of school children against the all white Simon Commision (that arrived in India in 1928) shouting the slogans like 'Simon Go Back'! She also led a group of children for shouting slogans against the Raj; picketing the liquor shops and shops selling foreign cloth. One day, a policeman tried to snatch the tricolour flags from the protesting girls. The next day, the same group of girls took out the procession wearing dresses smeared with three colours of the Tricolour flag and shouting slogans ' policemen! You can wield your batons but cannot snatch Tricolour flags from our hands"

When she was hardly 12 years old, she and her friends started distributing literature against the Raj and visiting the homes of freedom fighter prisoners for motivation. Simultaneously, she did her graduation from Wilson College Bombay.

Then came 9th August 1942 when all the top leaders of Quit India Movement were arrested in the early morning. People came on the streets and started damaging the government buildings and other infrastructure like telegraph wires or railway lines. Usha Mehta contacted Nanak Motwani, the owner of Chicago Radio in order to set up a clandestine radio station for broadcasting messages in order to exhort people to participate in the Quit India Movement on a massive scale. Motwani supplied all the equipment and technicians to do the needful. Accordingly, a Congress radio station was set up on 26th August 1942.Then Usha spoke in her bold voice," Hello! Indians. This is Congress radio station calling on wavelength 42.34 Hertz.from somewhere in India," the way Subhash Bose spoke from Germany almost at the same time. This broadcast electrified the whole nation. The radio program continued upto 12 th November when one of the technicians divulged this secret to the police. This resulted in the arrest of Usha and all her colleagues including Motwani. She was kept in solitary confinement and a C.I.D.inspector did his best to get her confession for the misadveture of setting up of a clandestine radio station. But she kept Maun Vrat and did not utter a word. She also kept Maun even during the trial. Still, the Magistrate

sentenced her four years of imprisonment and she was released in August 1946.

After her release, she did her M.A. and Ph.D from Bombay University. The title of her Ph.D thesis was " Social and economic thoughts of Mahatma Gandhi." Thereafter, she was appointed as a lecturer in Bombay University and retired from there as Professor in 1980. She wrote many articles and books to spread Gandhian thoughts.

She was elected as the President of Gandhi Samarak Nidhi and purchased Mani Bhawan in Bombay and converted it into a library and a museum. When Martin Luther King Jr. visited India in 1958, he slept in the Mani Bhawan to get Gandhian vibrations. President Obama also visited Mani Bhawan during his official visit to India in 2015.

Usha Mehta Ji also headed the Gandhian Peace Foundation. Govt of India honoured her with Padam Vibhushan in 1998. She attended the August Kranti Day falling on 9th August every year at August Kranti Maidaan in Bombay. She also attended the function on 9th August 2000 but got exhausted and breathed her last two days later.

Long live the memory of Usha Mehta Ji to inspire the present and future generations.

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Girl (22.12.2000), Height: 5'6", B.Sc. (Hons.) Computer Science (DU), MCA (NIT Allahabad), Software Engineer at Deutsche Bank (Campus Placement), Unmarried. Father working as Manager (F&A), RattanIndia Power Ltd., Delhi; Mother is a Homemaker. Elder Sister married and one Younger Brother. Address: Sector 2, Bahadurgarh, District Jhajjar, Haryana. Preference: IT, Management and other qualified professionals. Avoid Gotra: Siwach, Jakhar and Gehlawat. Cont.: 8800534445.
- SM4 Jat Girl (DOB 11.09.97) 28/5'4" B.Sc., M.Sc. from MDU. B.Ed. CTET. Preparing for government job. Father & mother retired from government service. Own house in Rohtak. Avoid Gotras: Gill, Sangwan, Khatri. Cont.: 8053576293, 9416657051
- SM4 Jat Girl (DOB 17.10.99) 26/5'3" M.A. Geography. B.Ed. Library Diploma. CTET qualified. Father Hindi Government Teacher. Mother housewife. Avoid Gotras: Siwach, Goyat, Sangwan. Cont.: 9466473177
- SM4 Jat Girl (DOB 15.02.99) 27/5'2" B.Sc. in Biotechnology. M.Sc. in Food Nutrition & Dietetics. Employed as Dietician in Health Department Haryana on regular basis. Posted in Mukand Lal Civil Hospital, Yamuna Nagar. Father's occupation: farming. Mother housewife. Younger brother Avionics Engineer in Indigo Airlines. Preferred match in government service. Avoid Gotras: Beniwal, Budhrain, Rathi. Cont.: 9991253501
- SM4 Jat Girl (DOB 20.06.2000) 26/5'1" B. Com, B.Ed. Father businessman. Avoid Gotras: Lakra, Malik. Cont.: 9216000072
- SM4 Jat Girl (DOB 29.11.94) 31/5'7" B.Sc. and MA Economics from MCM DAV College for Women Chandigarh. Working as (CE) in Air India Chandigarh. Salary Rs. 13 LPA. Father's own business (Book Shop). Mother housewife. Own residence and own shop in Chandigarh. Avoid Gotras: Pahal, Malik, Sehrawat. Cont.: 9988407607
- SM4 Jat Girl 26/5'1" Master in Fashion Management from NIFT. Father businessman. Mother housewife. Avoid Gotras: Sangwan, Ola, Lamba. Cont.: 9813309321
- SM4 Jat Girl (DOB 11.01.2002) 24/5'3" J.B.T. (first year). Deaf & Dump 100%. Father farmer. Mother housewife. Avoid Gotras: Malik, Suhag, Lathwal. Cont.: 7837332515
- SM4 Jat Girl (DOB 24.12.96) 29/ 6 feet Master in Law (LLM) and hons. In BALLB fro Uttranchal University, Dehradun. Currendly practicing as Advocate in Punjab & Haryana High Court, Chandigarh. 65 acre agriculture land in village. Family residence at Panchkula. Avoid Gotras: Nehra, Bhadu, Beniwal. Cont.: 9466535300
- SM4 Divorced Jat Girl 36/5'5" Employed as government Doctor, doing M.D. Reputed family. Preferred MBBS+MD or Class-I Officer. Cont.: 8901491517
- SM4 Jat Girl (DOB 28.10.98) 27/5'4" B.A. LLB (O. P. Jindal University). Profession Advocate. Working with International Law Firm. Salary Rs. 3 lac per month (36-40 LPA). Father Advocate in Punjab & Haryana High Court Chandigarh. Mother Senior Officer, General Manager in a Corporation of Haryana. Family settled at Panchkula. Preferred IAS/IPS/Judicial Officer or well established professional/Businessman from reputed family background. Avoid Gotras: Badhran, Goyat, Maan. Cont.: 9417203810
- SM4 Jat Girl (DOB 20.05.99) 27/5'5" BB.A. LLB, LLM from Kurukshetra. NET qualified. Practicing as Advocate in District Court Kurukshetra. Father farmer. Mother Housewife. Agriculture land 17 acre. Avoid Gotras: Bajwa, Dalal, Bal. Cont.: 9416172852
- SM4 Jat Girl (DOB 11.02.98) 28/5'5" M. A. English from Punjab University, Computer Diploma, B.Ed., CET qualified. Working in Private Company at Mohali. Father retired Superintendent from Haryana Government. Mother House wife. Preferred match Chandigarh/Tricity. Family settled at Zirkpur (Punjab). Avoid Gotras: Dahiya, Balyan. Cont.: 6239058052
- SM4 Jat Girl (DOB 01.05.94) 31/5'2" M.A. English from Punjab University. JBT. B.Ed. from Punjab University. CTET-tgt. Thrice, HTET-jbt. Four times, HTET-pgt. Twice, TET-jbt. Twice. Working as Government primary teacher in Punjab near Chandigarh. Father Deputy Manager in HMT. Pinjore. Mother housewife. Avoid Gotras: Sangwan, Phogat, Pilania. Cont.: 9416869289
- SM4 Jat Girl (DOB 28.02.93) 31/5feet. B. Tech. in Computer Science, Diploma in Computer Science, M. Tech. in Software Engineering. Working in reputed MNC at Chandigarh. Salary Rs. 8 LPA. Father retired Divisional Head Draftsman from Haryana government. Mother housewife. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Deswal, Sheoran. Cont.: 9417333298
- SM4 Jat Boy (07.03.2000) Height: 5'.11"12th with PCM BSc Computer science MDU Rohtak Master in Computer Application. Diploma health inspector govt. Job Chandigarh police(IT Excutive)Father Govt"Job. Mother House wife Unmarried. Sibling, One Elder brother Govt. Job. Haryana police. Gotra"Sangwan. Ahlawat. Janghu preference well educated height 5'4" and above residence Chandigarh Cont. 9718720065
- SM4 Jat Boy (DOB 16.04.98) 28/5'8" B. Com. Employed in Judiciary as Clerk. Father retired from HSVP. Mother housewife. Own house in Panchkula. Avoid Gotras: Kundu, Mehlawat, Joon.

Cont.: 9877297632

- SM4 Jat Boy (DOB 20.10.96) 29/5'9" Graduate & Post graduate from S.D. College Chandigarh. Occupation: Business. Father Businessman. Mother housewife. Own house in Panchkula. Avoid Gotras: Panghal, Moond, Sangwan. Cont.: 7986350696
- SM4 Jat Boy (DOB 11.03.95) 31/5'9" B. A. Employed in Indian Railways, Technician-I, Group-C. Father expired in Indian Railways. Mother pensioner (Indian Railways). Avoid Gotras: Suhag, Dhankar, Hooda. Cont.: 7837332515
- SM4 Jat Boy (DOB 13.02.96) 30/5'8" B. Tech. from PICT (Pune). P. G. from DAC Pune. Working as Software Engineer in Lowe's Banglore. Package Rs. 22 LPA. Father retired Honorary Flying Officer. Mother housewife. Family settled in Zirakpur. Avoid Gotras: Khatkar, Chahal, Saharan. Cont.: 9101241162
- SM4 Jat Boy (DOB 03.10.94) 31/5'11" B. Tech. Software Engineer. Income Rs. 18 LPA. Father Professor retired. Mother housewife. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Tomar, Malik. Cont.: 9463742136
- SM4 Jat Boy (DOB 18.10.2003) 22/5'8" Education 12th. Working in Taj Hotel Sector 17 Chandigarh. 2.5 acre agriculture land. 4 marla Koti in Chandigarh. Father's self work. Mother housewife. Family settled at Raipur Khurd (Chandigarh). Avod Gotras: Beniwal. Cont.: 8699113516
- SM4 Divorced Jat Boy (DOB 25.02.91) 35/ 6 feet. Graduate from Punjab University Chandigarh. Self Employed in Chandigarh (Book Shop). Income 15-20 lakh Per Annum. Own residence and won shop in Chandigarh. Father's own business (Book Shops). Mother housewife. Avod Gotras: Pahal, Malik, Sehrawat. Cont.: 9988407607
- SM4 Jat Boy (DOB 15.11.2000) 25/5'4" M. Pharma, MBA. Working as Junior Research Scientist in Mankind Pharma, Gurugram. Income Rs. 4.5 LPA. Father S.R. Director in MNC, Banglore. Mother housewife. Own house at Banglore, Hyderabad, Gurugram. Avoid Gotras: Thaken, Sangroha, Kadyan. Cont.: 9780683938
- SM4 Jat Boy (DOB 27.06.2002) 24/5'5" B.Tech., MBA. Working as Assistant System Engineer in TCS, Banglore. Income Rs. 4 LPA. Father S.R. Director in MNC, Banglore. Mother housewife. Own house at Banglore, Hyderabad, Gurugram. Avoid Gotras: Thaken, Sangroha, Kadyan. Cont.: 9780683938
- SM4 Jat Boy (DOB 07.04.96) 30/5'8" Ph.D. (Pursuing). Business University of the Camberlands (USA). MBA topper School of Business Camegie Mellon University USA. B. Tech. (CSE) Jaypee University of Information Technology Solan, India. Profession: Accelerated Leadership Program (Marketing Manager) Pro-Active USA, Product Manager: Edge AI Remote. Avoid Gotras: Nara, Dangi. Cont.: 9416950002
- SM4 Jat Boy (DOB 09.01.80) 36/5'7" B.E. in Electrical & Communication. MBA in General Management. Working as Associate Director, Management Consulting Company-ForvisMazars. Income RS. 35.5 lakh per year. Father retired Doctor. Mother retired Teacher. Own house in Panchkula, Banglore. Avoid Gotras: Phogat, Lamba, Ahlawat. Cont.: 9900107055
- SM4 Jat Boy (DOB 21.08.95) 30/5'9" B.E. in Mechanical Engineering. Working as SR Associate Digital Marketing in reputed MNC at Bombay. Income Rs. 8.5 lac per year & free lancing business. Father retired from PGI. Mother housewife. Own house in Chandigarh. Avoid Gotras: Dabas, Sangwan, Dhankhar. Cont.: 7508929045, 9779132009
- SM4 Jat Boy (DOB 20.10.92) 30/5'5" Graduate. Doing private job. Father retired from Government job. Mother in private job. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Lamba, Nandal, Ghalyan, Cont.: 7696771747
- SM4 Jat Boy (DOB 06.11.98) 27/5'9" B.A., MA, D.Pharmacy. Job: Pharmacy Shop. Three acre agriculture land. One plot in Rohtak. Avoid Gotras: Phogat, Rana, Tehlan. Cont.: 9306403477
- SM4 Jat Boy (DOB 13.12.98) 27/ 6 feet. B. A., MA from MDU Rohtak. Working in IDFC First Bank Private Ltd. at Gohana (Sonepat). Father expired. Mother Government job pensioner. Avoid Gotras: Gill, Siwach, Ahlawat. Cont.: 9812919970
- SM4 Jat Boy (DOB 29.03.99) 27/5'7" Post Graduate in Psychology. Serving in Indian Navy at Mumbai. Salary Rs. One lakh PM. Father businessman. Mother housewife. Family settled at Panipat (Haryana). Avoid Gotras: Ahlawat, Mor, Malik. Cont.: 9466701215
- SM4 Jat Boy (DOB 09.11.98) 27/ 6 feet. MA, History. Employed as Clerk in Haryana Government on regular basis. Avoid Gotras: Pattar, Gill, Nehra. Cont.: 8264141578
- SM4 Jat Boy (DOB 14.10.98) 27/5'9" B.Sc. Medical, B.Ed. (Biological Science). CTET, HTET cleared. Employed in Chandigarh Police. Father's self car sale, purchase business. Family settled at Ganaur (Sonepat). Avoid Gotras: Chhikara, Deswal, Malik. Cont.: 9518002197, 8813970974
- SM4 Jat Boy (DOB 11.01. 2003) 23/5'9" B.A., B.Ed., M.Sc. in Geography. Father farmer. Mother housewife. 5.6 acre agriculture land. Avoid Gotras: Dahiya, Suhag, Dabas. Cont.: 7837332515
- SM4 Jat Boy (DOB 03.08.99) 26/6 feet B.A. History Hons., SGTB Khalsa College, LLB from Faculty of Law, DU., LLM, Geeta University, Panupat, Private International Law, Hague Academy, International Court of Justice. Advocate in Punjab & Haryana High Court, Chandigarh. Father's own business of Real Estate. Mother housewife. Eight acre agriculture land, rental income. Avoid Gotras: Mali, Khatri, Phour. Cont.: 9466095995, 9416640442
- SM4 Jat Boy (DOB 09.09.97) 28/6 feet. B. Tech. Computer Science. MBA. Working as Software Engineer in Rocket Software Pune. Permanent work from home. Package Rs. 25 LPA. Father retired Supervisor from HMT Pinjore. Mother housewife. Own Coaching Institute--Banakura Classes. Agriculture land 4.5 acre. Family settled at Pinjore. Avoid Gotras: Bankura, Maan. Cont.: 9354839881
- SM4 Jat Boy (DOB 13.12.96) 29/5'7" Employed as Excise Inspector GST Department Ujjain (Bhopal Zone) M.P. Father in private sector. Mother housewife. Preferred Government job in Madhya Pradesh/Chhatisgarh. Avoid Gotras: Kandola, Nain, Dalal. Cont.: 9416339570
- SM4 Jat Boy (DOB 18.05.96) 29/5'10" B. Tech. PDM Bahadurgarh. Master (Finance) from Whu Otto Beisheim College Germany. Working as Equality Analyst in Kanou Capital New Delhi MNC, Headquarter in London (U.K.) Package Rs. 18 LPA. Father retired from Army, now Clerk in Oriental Bank of Commerce. Avoid Gotras: Dalal, Kadyan, Dahiya. Cont.: 8708370617, 9416823236
- SM4 Jat Boy (DOB 25.12.97) 28/5'8" Bachelor of Commerce. Working as Assistant Manager in IDBI Bank. Avoid Gotras: Sangwan, Kaswa, Jangu. Cont.: 9068574655

आर्थिक अनुदान की अपील



आवासीय परिसर

जैसा कि आपको विदित है कि जाट सभा चण्डीगढ़ द्वारा गांव नोमैई, ग्राम पंचायत कोटली बाजालान, कटरा–जम्मु में 10 कनाल भूस्थल पर दीनबंधु चौ० छोटूराम यात्री निवास के नाम से एक विशाल बहुमंजलीय भवन का निर्माण किया जायेगा। यात्री निवास के निर्माण, विस्तार व रख–रखाव आदि पर वर्ष 2019 से अब तक लगभग 2,36,52000 (दो करोड़ छतीस लाख बावन हजार) रुपये की राशि खर्च हो चुकी है और लगभग 63,50,000 (तरेसठ लाख पचास हजार) रुपये अनुदान के तौर पर प्राप्त हुये। आप सब के सहयोग से यात्री निवास स्थल पर इस समय शौचालय व बाथरूम सहित पांच वातानुकुलित डबल बैड कमरों व 15 बैड की डोरमैट्री का निर्माण किया गया है। यात्रियों की सुविधा के लिये भोजन की व्यवस्था हेतू कैन्टीन का निर्माण कर दिया गया है। इसके अलावा बिजली, पानी की उचित व्यवस्था के लिये 11 के.वी. ट्रास्फॉर्मर व सबमर्सिबल ट्यूबवेल लगा दिया गया।

इस प्रस्तावित यात्री भवन के निर्माण में कुछ स्थानीय प्रशासनिक व भूगोलिक तकनीकी दिक्कते आ रही है। इसलिये बुहमंजलीय भवन का निर्माण कार्य प्रशासन की स्वीकृति मिलते ही शुरू कर दिया जायेगा और हमें पूर्ण विश्वास है कि आप सभी के सहयोग व माता वैष्णों देवी की कृपा से इस विशाल प्रोजैक्ट का निर्माण अवश्य पूरा होगा।

अतः आप सभी से नम्र निवेदन है कि इस कल्याणकारी व पुनित सामाजिक कार्य के लिए स्वेच्छा अनुसार अनुदान देने की कृपा करें। यदि कोई दानी सज्जन यात्री निवास में कमरे के निर्माण हेतु 5 लाख रूपये या इससे अधिक की राशि दान देता है तो उसका नाम भवन परिसर में उचित स्थान पर अंकित किया जाएगा। यात्री निवास भवन के लिए अनुदान देने वाले सज्जनों का उचित विवरण रखा जाएगा और उनका नाम सभा द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'जाट लहर' में भी प्रकाशित किया जाएगा। इसके अलावा भवन निर्माण हेतू 11,000 रुपये या अधिक राशि देने वाले सभी दानी सज्जनों का अनुदान बोर्ड यात्री निवास परिसर में शीघ्र लगाया जा रहा है। भवन निर्माण की अनुदान राशि चैक, डिमांड ड्राफ्ट द्वारा 'जाट सभा चंडीगढ़' के पक्ष में जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, मध्य मार्ग, चंडीगढ़ में भेजी जा सकती है अथवा आर.टी.जी.एस की मार्फत सीधे जाट सभा के बचत खाता नंबर 50100023714552, आईएफएससी कोड– एचडीएफसी 0001324 में ट्रांसफर की जा सकती है। अनुदान की राशि आयकर अधिनियम की धारा 80–जी के तहत आयकर से मुक्त है।

निवेदक : कार्यकारिणी जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला,
चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

सम्पादक मंडल

सरंक्षक एवं सम्पादक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : **0172-5086180, M-9877149580**
Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकूला
फोन : 0172–2590870,M-9467763337
Email: jatbhawan6pkl@gmail.com

चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू M-9320693332

Postal Registration No. CHD/0107/2024-2026

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सरंक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोसियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2–बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27–ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।